लिये मैंने घरबार छोड़ा है। रुपये लेजा कर बालबच्चोंका पालन करूंगा। इस पिछले सफरमें मैं एक जहाजका कप्तान था और मेरे नीचे पचास याहू काम करते थे। उनमेंसे बहुतेरे मर गये तो और और देशोंके कुछ लोग उनकी जगहों पर रखने पड़े। दो बार हमारा जहाज डूबते डूबते बच गया। एक बार तो एक बड़े तूफान की चपेटमें आगया और दूसरी बार एक पहाड़से टकरा गया था।

प्रभु—जब तुम्हारे साथी मर गये और तुम पर विपद आई तो औरोंको तुम्हारे साथ आनेकी कैसे हिम्मत पड़ी अथवा तुमनेही उनको कैसे बहकाया ?

मैं—जो लोग मेरे साथ आये थे उनको कहीं ठिकाना न था। दाने दानेको वह मुहताज थे। दरिद्रता या भारी अपराधके कारण उन सबने अपनी अपनी जन्मभूमि त्यागदी थी। कोई मुक-द्दमेके मारे तबाह होगया था, कोई शराब, रण्डी और जुएमें अपना सब स्वाहा कर चुका था। कोई राजविद्रोह या विश्वास घात करके देशसे भागा था—कोई हत्या, चोरी, विष प्रयोग, डकैती, जालसाजी, नकली सिक्के बना और झूठी गङ्गाजली उठा कर चम्पत हुआ था। किसीने घृणित व्यभिचार करके काला मुंह किया और कोई अपना सङ्ग छोड़ कर शत्रुसे जा मिला था। बहुतों ने जेलकी बेड़ियां काटी थीं। फांसी पड़ने या जेलमें भूखों मरनेके डरसे किसीको भी स्वदेश लौटनेकी हिम्मत नहीं पड़तीथी। इसीसे बेचारे पेट भरनेकी फिकरमें इधरसे उधर डोलते थे।"

जब मैं बोलता था तो प्रभु बराबर टोकते जाते थे। जो बात उनकी समझमें नहीं आती थी उसको वह खोद खोदकर पूछतेथे। मैंने भी उन पापोंका रङ्ग ढङ्ग जिनके सबब हमारी समाजके बहुत से लोग देश छोड़ छोड़के भागे हैं प्रभुको बड़े शब्दाडम्बरसे समझाया। कई दिनके परिश्रमके बाद उनकी समझमें यह सब बातें आईं पर तो भी वह पूछते थे कि लोग पाप क्यों करते हैं। इसके करनेकी जरूरतही क्या है। मैंने तब शक्ति और धनको

चाहना तथा डाह, द्रोह, मदिरापान और कामेच्छाके भयानक फलकी तरफ उनका ध्यान दिलाया! इन सबका वर्णन करनेके समय मुझको अनुमान और घटना दोनोंकी सहायता लेनी पड़ी थी। जो बात पहले कभी देखी सुनी नहीं उसका ख्याल अचानक आजानेसे जो दशा होजाती है मेरी बातें सुन कर वही दशा घोड़ेरामकी हुई। वह आश्चर्यके साथ भौंहे तानके ताकने लगे। शक्ति, शासन, युद्ध, कानून दण्ड आदि हजारों शब्दोंका टोटा अश्व भाषामें था अतए इनका यथार्थ अभिप्राय समझानेमें बड़ी कठिनाई हुई। पर उनकी समझ अच्छी थी और इधर वार्तालाप होते होते विचारनेकी शक्ति भी बढ़ गई थी इससे शेषमें उन्हें पूरे तौरसे मालूम होगया कि हमारे देशके मनुष्य क्या क्या करनेके योग्य हैं। इसके उपरान्त उन्होंने युरोपकी खास कर इङ्गलैण्डकी मुख्य मुख्य बातें कहनेके लिये अनुरोध किया।

पञ्चम परिच्छेद।

दो ढाई सालमें मेरे और प्रभुके जो वार्तालाप हुआ था उसका सार खेंच कर पाठकोंको मैं सुनाता हूं। मैं ज्यों ज्यों उनकी भाषा में व्युत्पन्न होता जाता था त्यों त्यों सविस्तर वृत्तान्त सुननेके लिये उनकी भी तृष्णा बढ़ती जाती थी। मैंने भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। युरोपका अच्छी तरहसे पेट फाड़ कर उनके सामने धर दिया। वाणिज्य व्यापार शिल्प विज्ञानको भी मैंने नहीं छोड़ा। विविध विषयों पर जो प्रश्नोंत्तर चलते सो कभी घटतेही न थे। पर मैं तो यहां उन्हीं बातोंका सारांश लिखूंगा जो अपने देशके विषयमें हुई थीं। मैंने बातोंका सिलसिला यथा शक्ति दुरुस्त कर दिया है। समयादिकी कुछ परवाह न कर सत्यताकी तरफ ध्यान दिया है। मगर अफसोस सिर्फ यही है कि प्रभुकी दलीलें और महाविरे ठीक ठीक प्रकाश न कर सकूंगा क्योंकि एक तो मुझमें इतनी योग्यता नहीं और दूसरे हमारी अंगरेजी भाषा भी गंवारी है।

प्रभुके आज्ञानुसार मैंने कहा—"तीसरे विलियमके समय राज्य

में बहुत उलट पलट हुआ था। उसीने फरांसके साथ महायुद्ध ठाना जिसको उसके उत्तराधिकारीने भी चलाया था। इसमें सब बड़े बड़े ईसाई राजा शामिल हुए थे। इस युद्धमें कोई दस लाख यात्रू (मनुष्य) खेत रहे, शायद एकसौसे अधिक नगर लिये गये और सैकड़ों जहाज डवोये या जला दिये गये होंगे।"

प्रभु—अच्छा राजा आपसमें एक दूसरेसे लड़ते हैं इसका मामूली सबब क्या है?

मैं—सबब तो बहुत हैं पर दो चार भारी भारी सुनाता हूं। एक तो राजोंकी राज्य तृष्णा कभी अघाती नहीं है। दूसरे मन्त्रियोंकी बदमाशी जो राजोंको युद्धमें लगा कर आप हाथ मारते हैं और प्रजाकी पुकार राजा तक पहुँचने नहीं देते। सच पूछिये तो मंत्री लोग अपना ऐब ढांकनेहीके लिये राजोंको युद्धादिमें फंसा देते हैं। मतभेदसे भी लाखोंकी जान गई हैं। मांस रोटी है या रोटी मांस है—किसी फलका रस लहू है या शराब——बांसुरी बजाना पुण्य है या पाप—डण्डेको अर्थात् क्रूसको चूमना अच्छा है या आगमें जलाना—कोटके लिये बढ़िया रङ्ग कौनहै काला, उजला, लाल या भूरा—कोट लम्बा हो या छोटा, चौड़ा हो या सकड़ साफ हो या मैला—इत्यादि इत्यादि बातोंही पर युद्ध चलता है। सो युद्ध भी कैसा कि जो बरसों चले और जिसमें लाखोंकी जान जाय।

कभी कभी दो राजा तीसरेका राज्य दखल करनेके लिये आपसमें लड़ मरते हैं जहां उनका कुछ भी हक नहीं है। कभी कभी कोई राजा एकके भयसे दूसरेके साथ लड़ जाता है। कभी शत्रुके बहुत जबरदस्त होनेसे और कभी बहुत कमजोर होनेसे भी संग्राम होता है। जो चीज पड़ोसीके पास है उसको हम लेना चाहते हैं या हमारे पास है उसे पड़ोसी लिया चाहते हैं, कभी इसी बात के लिये लड़ाई होती है। जब तक उससे उस चीजको ले न लें या दे न दें लड़ाई बन्द नहीं होती। अकाल और महामारीने जिस देशको तबाह कर दिया है और जहां आपसमें फूट फैल गईहै उस

देश पर चढ़ाई करना तो युद्धका एक उचित कारणहै। उस निकट वर्ती मित्रसे भी जिसका राज्य लेलेनेसे हमारा राज्य दृढ़ और रक्षित हो लड़ाई करना उचित समझा जाता है। जहां मनुष्य दरिद्र और मूर्ख हैं वहां सेना भेजकर आधोंको मरवा डालना और बाकी को सुसभ्य बनानेके लिये गुलाम बनाना भी न्याय सङ्गत है। किसी राजाने शत्रुके आक्रमणसे बचनेके लिये दूसरे किसी राजाकी सहायता मांगी। उसने आकर सहायताकी पर पीछे शत्रुको भगा कर आपही उसका शत्रु बन बैठा। जिसकी रक्षाके लिये आना उसी को मार डालने, कैद करने, या निकाल बाहर करनेमें बड़ा नाम और इज्जत होती है। राजाओंमें रक्त वा विवाहसे सम्बन्ध होना भी युद्धका एक कारणहै। नाता जितना निकट होगा लड़ाई भी उतनीही ज्यादे होगी। गरीब बिचारे भूखों मरते हैं और अमीर घमण्ड करते हैं। घमण्ड और दरिद्रतासे सदा वैर है। इन कारणोंसे फौजके सिपाहीका काम सबसे इज्जतदार समझा जाता है क्योंकि यह सिपाही अपने निर्दोष जाति भाइयोंके मारनेके लिये रक्खे जाते हैं। उनके जाति भाइयोंने चाहे उनका कुछ न बिगाड़ा हो पर वह मनमाने तौरसे उनकी हत्या करेंगे।

युरोपमें ऐसे भी बहुतसे गरीब राजा हैं जो आप तो किसीसे लड़ नहीं सकते परन्तु अपनी फौज दूसरे धनवान् राजाओंको भाड़े पर देते हैं। जो रुपये मिलते हैं उनमेंसे चार आने तो सिपाहियों को देते और बारह आने आप लेलेते हैं। इसीसे उनका गुजारा मजेमें होता है युरोपके उत्तर भागमें ऐसे राजा अनेक हैं।

प्रभु—तुमने जो कुछ कहा उससे तुम्हारी बुद्धिमानीका विलक्षण पता लगता है। खैर, आनन्दकी बात है कि लज्जा भयसे बड़ी है और परमेश्वरने भी तुमको ज्यादे दुष्टता करनेके योग्य नहीं बनाया है। तुम्हारा मुंह ऐसा चपटा है कि तुम जबरदस्ती किसी को काट नहीं सकते। तुम्हारे पञ्जे ऐसे छोटे और मुलायम हैं कि हमारा एक याहू तुम्हारे जैसे दर्जन भरके दांत खट्टे कर सकता है।

इस वास्ते तुमने युद्धमें मारे जानेवालोंको जो गिनती बताई है सो मुझे—"वह चीज जो नहीं है" (झूठ) मालूम पड़ती है।

प्रभुकी अज्ञानता देख मैं मुस्कराहट रोक न सका। मैं युद्ध विद्यासे अनभिज्ञ न था। मैंने तोप, बन्दूक, कड़ाबीन, पिस्तौल, गोली, छर्रा, बारूद, तलवार, सङ्गीन, युद्ध, किला घेरना हटाना, चढ़ाई करना, सुरङ्ग खोदना, तोपसे उड़ाना, जल संग्राम हजार मनुष्य समेत जहाज डबोना, हरएक तरफ बीस बीस हजार आदमियोंका मारा जाना, मरनेके समयका कराहना, अङ्गों का हवामें उड़ना, धूआं धक्कड़, गुलगपाड़ा, गोलमाल, घोड़ोंकी टापोंके नीचे कुचल जाना, रनखेतमें कुत्तों भेड़ियों और गिद्धोंका मांस खाना, लूटना, छीनना, मूसना, जलाना, उजाड़ना आदि बातोंका पूरा हाल प्रभुको कह सुनाया। अपने प्यारे देशवासियों के साहसको प्रकाश करनेके लिये कहा था कि मैंने आंखोंसे सैकड़ों दुश्मनोंको तोपोंके द्वारा उड़ते तथा उनके अङ्गोंको टुकड़े टुकड़े होकर आकाशसे गिरते देखा है।

मैं और कुछ कहनेको था पर प्रभुने मना किया और कहा— "जो कोई याहुओंका स्वभाव जानता है सो सहजमें विश्वास कर सकता है कि ऐसे निकृष्ट जीवको कहीं ईर्षाके समान धूर्तता और शक्ति होती तो उसके लिये सब काम जो तुमने कहा सम्भव थे। लेकिन तुम्हारी बातोंसे सारी जाति पर मेरी घृणा और भी बढ़ गई है। ऐसी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। पीछे चाहे सुनते सुनते अभ्यास पड़ जाय लेकिन आज तो सुन कर सिर घूम गया। मैं याहुओंसे घिन करता हूं पर उनके दोषोंको शिकारी पंछीकी क्रूरतासे और मेरे सुम तोड़नेवाले पत्थरोंकी तीक्ष्णतासे अधिक नहीं समझता हूं। लेकिन जो जीव बुद्धिमान बननेका दावा करता है सो अगर ऐसे ऐसे महापापोंको कर सकता हो तो वह अज्ञान पशुओंसे भी गया बीता है। इससे मुझको विश्वास होता है कि तुम लोगोंको अकल फकल कुछ नहीं है केवल एक

शक्ति है जिससे तुम्हारे स्वाभाविक पाप बढ़ा करते हैं। नदियोंके हिलते हुए जलमें कुढङ्ग वस्तुओंकी परछांही केवल बड़ीही नहीं वरन् और भी कुरूप मालूम पड़ती है।"

युवका विषय समाप्त हुआ। अब दूसरा प्रसङ्ग छिड़ा। मैंने कहा था कि कानूनसे तबाह होजानेके डरसे बहुतसे आदमी देश छोड़ कर चले गये हैं। इस पर वह बोले थे—"तुमने तो पहले कहा था कि कानून प्रजाकी भलाईके लिये बनता है फिर उससे तबाह होनेका डर क्यों? यह बात मेरी समझमें नहीं आई। कानून या कानूनके चलानेवालोंसे तुम्हारा क्या अभिप्राय है सो खुलासा कह जाओ। मैं समझता हूँ प्रकृति और ज्ञानही सज्ञान जीवोंको कुपथसे बचा कर सुपथ पर चलानेवाले हैं। तुम भी तो सज्ञान बनते हो कहो आजकल तुम्हारे यहां आईन कानूनका क्या रङ्ग ढङ्ग है?"

मैं बोला—"साहब! आईन कानून भी एक विद्या है जिसमें मेरा पूरा दखल नहीं है पर हां एक बार मुझ पर कुछ अन्याय हुआ तब मैंने एक वकील मुकर्रर किया था पर कुछ लाभ नहीं हुआ। खैर, जहां तक बनेगा मैं आपको सब कह सुनाऊंगा।

"मेरे यहां बहुतसे लोग बने हुए लम्बे चौड़े शब्दोंके द्वारा उजले को काला और कालेको उजला सिद्ध करनेकी विद्या बचपनसे सीखतेहैं। जो जैसा दाम देताहै उसका काम भी यह लोग वैसाही करते हैं। इन लोगोंकी एक मण्डलीही अलग है। और जितने लोग हैं सो इस मण्डलीके गुलामहैं। इसका एक उदाहरण सुनिये। मान लीजिये किसी पड़ोसीकी आंख मेरी गाय पर लगी। वह लेनेके लिये एक वकील भाड़े करेगा। मुझे भी तब अपना हक दिखलानेके वास्ते एक दूसरा वकील करना पड़ेगा क्योंकि किसी का अपने लिये आप बोलना आईनके विरुद्ध है। इस मामले में सच्चा अधिकारी होने पर भी मैं दुहरे नुकसानमें रहूंगा। एक तो मेरे वकील साहबने जन्महीसे झूठकी तरफदारी करनेका

अभ्यास किया है फिर सच्ची बातमें उनकी अकल क्यों काम करने लगी? यह तो उनके लिये अस्वाभाविक कार्य है। इच्छा चाहे उनकी बुरी न हो पर वह काम जरूर बुरा कर डालेंगे। दूसरे मेरे वकीलको बहुत सावधानीसे चलना होगा नहीं तो कानूनकी चाल घटानेवालोंकी तरह जजोंकी भिड़कियां तथा और और वकीलोंकी फटकार सुननी पड़ेगी। इसलिये गाय बचानेके बस दोही उपाय हैं। एक तो विपक्षीके वकीलको डबल फीस देकर मिला लेना। फिर वह अपने मवक्किलको यह कह कर धोखा देगा कि दावा तुम्हाराही पक्का है। दूसरा यह कि मेरा वकील मेरे दावेको झूठा और शत्रुके दावेको सच्चा यथाशक्ति सिद्ध करे। अगर यह काम तनिक चतुराईसे किया जाय तो मेरे पौ बारह हैं। आप यह भी जानलें कि यह जज लोग दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकारके मुकद्दमे करते हैं। अच्छे अच्छे वकीलोंमें जो बूढ़े और आलसी होते हैं वही जज बनाये जाते हैं। जन्मभर सत्य और न्यायके विरुद्ध रहनेके कारण जज लोग छल कपट, मिथ्या शपथ और अत्याचारके पक्के पक्षी होजाते हैं। यहां तक कि सच्चे मुकद्दमोंमें घुस लेना भी पसन्द नहीं करते। सच्चेकी तरफदारी करना वह अपमान समझते हैं। मैं ऐसे कई जजोंको जानता हूं जिन्होंने सच्चे आदमियोंसे भारी घूस न लेकर झूठोंसे हलकी घूस ली है।

वकीलोंमें एक दस्तूर यह है कि जो बात पहले होचुकी हैं उस कानूनसे फिर कर सकते हैं। इसलिये यह लोग उन फैसलों को बड़ी सावधानीसे लिख रखते हैं जो एक बार साधारण न्याय और युक्तिके विरुद्ध होचुके हैं। बुरेसे बुरे मुकद्दमोंके सबूतमें यह लोग इन्हीं फैसलोंको नजीरके बतौर पेश करते हैं। फिर जजोंकी क्या मजाल जो इनके विरुद्ध कुछ करें।

वकील लोग बहसके समय मुकद्दमेकी असल बातोंको छोड़कर फालतू बातें बड़े जोर शोर और नोंक झोंकसे बकते हैं। इसी मामलेमें वह कभी नहीं पूछेंगे कि मेरी गाय पर शत्रुका किस

तरह अधिकार पहुंचता है। लेकिन यह जरूर पूछेंगे कि मेरी गऊ लाल है या काली—उसके सींग छोटे हैं या बड़े - मैं जिस खेत में उसे चराता हूं वह गोल है या चौकोर—वह घरमें दूही जाती है या बाहर—उसके कोई रोग है या नहीं इत्यादि। इसके बाद नजीरें निकलेंगी। फिर मुलतवीकी बारी आवेगी सो बरसों चलेगी। दस बीस तीस सालके बाद नतीजा निकलेगा।

इन वकीलोंकी एक खास गलबल भाषा है जो किसीको समझमें नहीं आती। इसी भाषामें आईन कानून लिखे जाते हैं यह लोग सबका ऐसा गड़बड़ झाला कर देते हैं कि झूठ सच और न्याय अन्याय कुछ मालूमही नहीं पड़ता है। इसीसे मामलोंमें इतनी देर होती है। जो जमीन छः पीढ़ियोंसे मेरे दखलमें चली आती है वह मेरी है या तीनसौ मील दूर रहनेवाले एक विदेशी की, ऐसे फैसलेके लिये भी तीस साल दरकार हैं।

उन मुकद्दमोंकी कार्रवाई बहुतही मुख्तसिर और तारीफके लायक है जिनमें सरकार मुद्दई होती है। जज लोग बड़े बड़े शक्तिशाली राजकर्म्मचारियोंका रङ्ग ढङ्ग देखकर अपराधीको फांसी दे देते या छोड़ देते हैं पर दिखानेके लिये कानूनको शरण अवश्य ले लेते हैं।"

प्रभु बीचहीमें बोल उठे—"तुम्हारे कहनेसे मालूम होता है कि तुम्हारे वकील सब बड़े योग्य और गुणवान होते हैं मगर अफसोस यही है कि दूसरोंको शिक्षा देनेके लिये उन्हें कोई उत्साहित नहीं करता है।" मैंने कहा—"आपका कहना ठीक है लेकिन यह वकील सब अपने पेशेको छोड़ कर दूसरे कामोंमें निरे छत और लण्ठ होते हैं। इनसे बोलनेमें जी घिनाता है। यह महानीच और सब विद्याओंके परम बैरी होते हैं। अपने पेशेमें लोगोंको जैसे बहकाते हैं वैसेही हर वक्त हर बातमें सबको बहकानेके लिये तैयार रहते हैं।

षष्ट परिच्छेद।

यह प्रभुके ध्यानमें बिलकुल नहीं आया कि वकील लोग अपने जाति भाइयोंको हानि पहुँचानेके लिये क्यों इतने परेशान रहते हैं। मैंने कहा था कि वह भाड़ा लेकर ऐसा करते हैं पर यह भी उनकी समझमें नहीं आया कि भाड़ा क्या वस्तु है। इसके समझानेमें मुझको अपार कष्ट उठाना पड़ा था। रुपया क्या है, रुपयेसे क्या होता, रुपया किन धातुओंसे बनता है और रुपयेकी कीमत क्या है सो सब समझा कर मैंने कहा—"जब याहुओं (मनुष्य) के पास खूब रुपये पैसे होते हैं तब वह बढ़ियासे बढ़िया पोशाक, अच्छेसे अच्छा घर उत्तमसे उत्तम खान पान, सुन्दरसे सुन्दर स्त्रियां, अधिकसे अधिक भूमि सम्पत्ति आदि जो चाहें खरीद सकते हैं। मतलब यह कि रुपयेहीसे सब कुछ होता है। पर रुपयेसे कभी किसीका पेट भरता नहीं। जो लोभी हैं सो धन बटोरनेके लिये और जो खर्चीले हैं सो उड़ानेके लिये हाय हाय करते रहते हैं। गरीब बेचारे मेहनत करते हैं और अमीर मजा उड़ाते हैं। हजार पीछे एकही बड़ा आदमी निकलता है नहीं तो सब दुःखी। जो रोज मजूरी करते और रूखा सूखा खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं कुछ बड़े आदमियोंको आराम पहुँचानेहीके लिये यह बिचारे परिश्रम करते हैं।

इस विषयमें मैंने और भी बहुत कुछ कहा पर उनकी समझमें कुछ न आया। वह बोले—"जो कुछ जमीनमें उपजता है उस पर सबका दावा है और विशेष कर उनका है जो सबके सिरताज होते हैं। अच्छा यह बताओ कि उत्तमसे उत्तम खान पान क्या है? सबको इसका टोटा क्यों होता है?" यह सुन कर मैंने सब खानों के नाम तथा उनके बनानेकी तरकीबें जो याद थीं कह सुनाईं। यह भी मैंने कहा कि दुनियांके हर एक हिस्सेमें जहाज भेजे बिना खाने पीनेकी सामग्रियां जुट नहीं सकती हैं। स्त्रियां जब तक

सारी दुनियाके तीन चक्कर न लगा आवें तब तक उनके मनकी चोजही नहीं मिलती है। प्रभु बोल उठे—"वह देश बड़ा सत्यानाशी है जहां खानेके लिये कुछ नहीं मिलता है। खाना तो एक ओर रहा जहां पानीका भी ठिकाना नहीं है।"

मैं—नहीं साहब यह बात नहीं है। इङ्गलेण्डवाले जितना खा सकते हैं उससे तिगुनी उपज वहां होती है। इसके सिवा अन्नको और फलकी सुन्दर शराबें बहुतायतसे बनती हैं। और भी जरूरत की सब चीजें वहां मिलतीहैं। पर मर्दोंके ऐशो अशरत तथा औरतों की नाज बरदारीके लिये अपने यहांकी जरूरतकी बहुतेरी चीजें दूसरे देशको भेजनी पड़तीहैं और वहांसे बदलेमें रोग, मूर्खता और पापकी जड़ लेनी पड़ती है। इसीसे हमारे बहुतेरे भाई लाचार होकर पेटके लिये भीख मांगते, डकैती करते, चोरी करते, ठगते, कुटनापन करते, खुशामद करते, झूठी कसम खाते, जाल करते, जूआ खेलते, झूठ बोलते, चापलूसी करते, गुण्डई करते, वोट बेचते, कलम घसीटते, नक्षत्रोंकी तरफ निहारते, विष देते, निन्दा करते, हत्या करते, व्यभिचार करते और न जाने क्या क्या करते हैं।

कुछ पानीके बदले हम लोग शराब नहीं पीते हैं जीको खुश करनेके लिये पीते हैं। यह पानीकी तरह एक पतली चीज है। इसके पीनेसे आदमी मस्त होजाता है, चिन्ता फिकर दूर होजाती है, अच्छी अच्छी तरङ्गे मनमें उठतीं हैं, भय भाग जाता है, बड़ी बड़ी आशायें होती हैं, शरीर निबल होजाता है, ज्ञान लुप्त हो जाता है और गाढ़ निद्रा आती है। यह सब कुछ होता है पर पीछे रोग धर दबाते हैं और शक्ति चली जाती है। फिर जीवन भार होजाता है।

बहुत लोग बड़े आदमियोंको और आपसमें एक दूसरेको नित्य के सुखकी सामग्री या जरूरी चीजें देकर अपना गुजारा करते हैं। मैं अपनी कहता हूं सुनिये जब मैं अपने देशमें कपड़ोंसे लैस होकर चलता हूं तो मेरी देह पर सैकड़ों सौदागरोंकी चीजें रहती हैं।

इमारत और घरके असबाबोंमें हजारों रुपयेकी और प्राणप्यारीके शृङ्गारमें तो न जाने कितनेको रहती हैं।

मैं आपसे निवेदन कर चुका हूं कि मेरे देशमें बहुतसे लोग बीमारियोंसे मरते हैं। कुछ लोग इन्हीं बीमारियोंको चङ्गा करके अपनी जीविका चलाते हैं।

प्रभु यह बात मेरे ध्यानमें नहीं आई। हमारे हिनहिन सब तो मरनेसे सिर्फ दो चार दिन पहले कमजोर और सुस्त होजाते हैं। संयोगसे कभी कोई अङ्ग भङ्ग भी होजाता है। यह बात तो बिलकुल असम्भवसी मालूम होती है कि प्रकृति देवी तुम्हारी देहमें रोग पैदा होने देगी क्योंकि उसके सब कार्य्य पूर्ण होते हैं अपूर्ण नहीं। तुम लोग इतने रोगी क्यों होते हो? इसका कारण क्या है?

मैं—हम लोग हजारों तरहकी चीजें खाते हैं जो पेटमें जाकर अपना जुदा जुदा असर डालती हैं। इसके सिवा जब भूख नहीं तब हम लोग खा लेते हैं। जब प्यास नहीं तब पानी पी लेते हैं। बिना कुछ खाये खाली पेटमें रात रातभर तेज शराब पीते रहते हैं। इससे शरीर शिथिल होजाता है, भूख मर जाती है और देह गर्म हो आती है। वेश्याओंसे एक प्रकारका रोग होता है जिससे हम लोगोंकी हड्डियां तक गल जाती हैं।

यह और बहुतसी दूसरी बीमारियां बापसे बेटेको मिलती हैं। इसलिये बहुतेरे आदमी रोगकी गठरी लादे जन्म लेते हैं। कहां तक कोई नाम बतावेगा रोग अनन्त हैं। मनुष्यका शरीरही अगर सच पूछिये तो रोगका घर है। बीमारोंको चङ्गा करनेके लिये एक प्रकारके लोग हैं जो लड़कपनहीसे यह काम सीखते हैं।

सच्चे रोगोंके सिवा बहुतसे मन गढ़न्त भी हैं। वैद्यगण इनकी मनगढ़न्त दवा भी तैयार करते हैं। इन रोगों और औषधोंके अलग अलग नाम हैं। इन रोगोंसे प्राय: औरतेंही बीमार होती हैं।

वैद्यगण भविष्य कहनेमें बड़े पटु हैं। इनके वचन शायदही झूठ निकलते हैं अगर वैद्यराजके मनमें कुछ कीना हुआ तो

सब्बी बीमारियोंमें आप मृत्युहीकी बात पहले कहते हैं क्योंकि यह उनके इख़्तियारकी बात है। आगम कहनेके बाद कहीं रोगीके अच्छे लक्षण दैव संयोगसे दिखाई पड़े तो आप झूठे बननेके डरसे एकाध पुड़िया ऐसी छोड़ देते हैं कि काम पूरा ही जाता है।

जिन स्त्री पुरुषोंमें अनबन होजाती है उनके लिये वैद्य विशेष कर लाभकारी हैं। ज्येष्ठ पुत्र, प्रधान मन्त्री और राजकुमारोंको भी इनसे लाभ पहुँचता है।

मैंने पहले किसी मौके पर अपने देशकी शासन प्रणालीके विषयमें जिसकी धाक सारे संसारमें है कुछ कहा था। उस समय प्रधना मन्त्रीका भी जिकर आया था। आज फिर प्रधान मन्त्री का नाम सुन कर प्रभु पूछ बैठे कि यह लोग किस तरहके याहू (आदमी) होते हैं।

मैं पुन: यों कहने लगा—"राज्यके प्रधान मन्त्री भी एक प्रकार के जीवही हैं जिनके न हर्ष है न शोक, न दया न मया, न काम न क्रोध, न प्रेम न घृणा और न कोई विषय वासनाही है। है केवल धन, प्रभुता और उपाधि पानेकी उत्कट अभिलाषा। वह बोलते सब कुछ हैं पर उससे उनके मनका भाव प्रगट नहीं होता है। वह इस इरादेसे कभी सत्य नहीं बोलते कि कोई उसे सत्य समझले और न इस इरादेसे झूठही बोलते हैं, कि कोई उसे झूठ जानले। पीठ पीछे जिनकी वह शिकायत करते हैं समझलो उनके पौ बारह हैं और जिनकी मुँह पर तारीफ करें बस जानलो कि उनके दिन खोटे आये हैं। जब मन्त्रीगण वादा करें—विशेष कर जब कसम खाकर वादा करें तो समझ लेना चाहिये कि लक्षण बुरे हैं। फिर बुद्धिमान लोग ठहरते नहीं आशा छोड़ कर चल देते हैं।

प्रधान मन्त्रीके पद पर पहुँचनेके बस तीनही उपाय है। पहला जोड़ू, बेटी या बहनको चालाकीके साथ दूसरेके हवाले करना; दूसरा आगेके मन्त्रियोंका दोष निकालना और तीसरा सभा समाज

में राज दरबारके कलङ्को पर उत्साह पूर्वक लेकचर फटकारना। लेकिन चतुर राजा उन्हींको अधिक पसन्द करते हैं जो पिछले उपाय का अभ्यास करते हैं। क्योंकि ऐसेही परमोत्साही लोग उनको हांमें हां मिला कर सदासे ठकुरसुहाती कहते आये हैं। मन्त्रीही सब कामोंके कर्त्ता धर्त्ता और विधाता होते हैं। वह सीनेटवालोंको रिशवत देकर अपनी शक्ति बनाये रखते हैं। वह सब लोगोंसे रुपये भी खूब लूटते हैं। पर अन्तमें—"* एक्ट आफ इण्डेमनिटी" की दुहाई देकर वह लोग निकल जाते हैं। हिसाब किताब पूछना तो दूर रहा कोई उनके सामने चूं तक नहीं करता है।

प्रधान मन्त्रीका महल भी एक कारखानाही समझिये जहां नित्य नये मन्त्री गढ़े जाते हैं। नौकर, चाकर और दरबान लोग भी अपने मालिककी नकल करके जुदा जुदा महकमोंके मन्त्री हो जाते हैं। सिर्फ यही नहीं घमण्ड झूठ और घूसमें उनसे भी आगे बढ़ जाना सीखते हैं। इससे फल यह होता है कि वह ऊंचे दर्जे के लोगोंको चेला बना कर अपना मतलब गांठते और कभी कभी चालाकी और बेशर्मीसे धीरे धीरे अपने स्वामीहीके उत्तराधिकारी बन जाते हैं।

प्रधान मन्त्रीके यहां छह वेश्या या मुँहलगी चपरासीकी खूब चलती बनती है। इन्हीं लोगोंके द्वारा आपकी कृपा सर्वत्र रेंगती फिरती है। राजकाजके चलानेवाले अगर यही लोग कहे जायं तो कुछ अत्युक्ति नहीं है।

एक दिन मैंने अपने यहांके बड़े आदमियोंकी कुछ चर्चाकी थी। प्रभु प्रसन्न होकर बोले—"तुम भी जरूर किसी बड़े आदमी के बेटे हो क्योंकि तुम हमारे याहुओंसे रङ्ग, रूप और सफाईमें बहुत चढ़े बढ़े हो। इतनी फुर्ती और बल तो तुममें नहीं है क्योंकि

---

* Act of indemnity (क्षति पूर्णकी धारा)। द्वितीय चार्लस ने असलमें यह कानून प्रथम चार्लसके विरोधियोंको क्षमा प्रदान करनेके लिये बनाया।

तुम्हारी रहन सहन दूसरे ढङ्गकी है। लेकिन तुम बोलना जानते हो। सिर्फ यही नहीं तुम्हें अक्लसे भी कुछ सरोकार है। इसीसे छिनछिन लोग तुम्हें अद्भुत याङ्क कहते हैं।"

इस पर मैंने कहा—"आपने कृपा कर अपने श्रीमुखसे मेरी प्रशंसाकी इसके लिये आपको धन्यवाद है परन्तु मैं यह कह देना उचित समझता हूं कि मैं बड़े आदमीका लड़का नहीं हूं। मेरे मां बाप सीधे सादे सच्चे भलेमानसथे। अवस्था ओढ़नकी कुछ ऐसी अच्छी न थी। धनके बिना मेरी शिक्षा भी पूरे तौरसे न होसकी। योंही टुटरूंटूं कुछ थोड़ासा पढ़ लिया है। हमारे यहांके बड़े आदमी कैसे होते हैं सो आप अभी नहीं जानते हैं। उनका ढङ्गही निराला है। बड़े आदमियोंके लड़के बचपनहीसे सुस्ती और ऐयाशीकी तालीम पाते हैं और बड़े होने पर पुरुषार्थको नष्ट कर कुल-टाओंसे विकट रोग मोल लेते हैं। अपना घर फूंक तमाशा देख कर वह लोग केवल रुपयेके लोभसे नीच, कुरूप, रोगी स्त्रियोंके साथ व्याह करते हैं पर उनसे सन्तुष्ट कदापि नहीं होते। इसीसे उनकी सन्तान भी रोगी, दुर्बल और अपोगण्ड प्रायः उत्पन्न होती है। अगर स्त्रियोंने अड़ोस पड़ोस या नौकर चाकरोंमेंसे किसी हट्टे कट्टे तन्दुरुस्तको चुनलिया तो खैर है नहीं तो तीसरीही पीढ़ीमें बमबोल जाती है। कमजोरी, बीमारी, दुबलापन और पीलापनही बड़े आदमियोंकी सच्ची पहचान है। हट्टा कट्टा और मजबूत होना उनके लिये बेइज्जती है क्योंकि सब कोई उन्हें साईस या गाड़ीवानसे पैदा हुआ बताने लगेंगे। वह लोग तिल्ली, ढिलाई, मूर्खता, सनक, कामशक्ति और घमण्डके मारे जैसे शरीरसे हीन होते हैं वैसेही बुद्धिसे भी।

इन्हीं लोगोंकी सलाहके बिना आईन कानून न बनता है, न बदलता है और न उठता है। यही लोग हमारी भूमि सम्पत्तिके विषयमें जो कुछ निर्णय कर देतेहैं सो अचल होजाता है। उसका खण्डन फिर कोई नहीं कर सकता है।

सप्तम परिच्छेद।

पाठकगण! आप आश्चर्य करेंगे कि जो मुझे याहू समझ कर समस्त मानव जातिके प्रति घृणा प्रकाश करे उसके सामने मैंने अपने यहांकी सब बातें खोलकर कैसे कह दीं। पर इसका कारण है। मैं स्पष्ट कहता हूं कि उन भले चारपायोंके सद्गुणोंने मेरी आंखें खोल दीं। उनकी सङ्गतसे मेरी समझ ऐसी होगई कि मैं मनुष्यके कार्य्य और वासना मात्रको दूसरीही दृष्टिसे देखने लगा। मैंने मनुष्य मर्य्यादाकी रक्षा करनेके योग्य नहीं समझा। और समझहीके भला क्या करता? प्रभु तो ऐसे ढङ्गसे सब बातें पूछते थे कि उनका छिपाना मेरे लिये असम्भवही था। इसके अतिरिक्त वह हजारों दोष मुझमें नित्य निकाला करते थे जिनकी खबर पहले मुझको कुछ भी न थी। हम लोगोंमेंसे कोई भी उन दोषों को दोष करके नहीं मानेगा। प्रभुका अनुकरण कर मैं भी असत्य भाषण और कपटाचारसे बहुत भागने लगा। सत्य ऐसा प्रिय मालूम हुआ कि मैं उस पर सब कुछ वार बैठा।

एक वर्षके भीतरही वहांवालों पर मेरी इतनी श्रद्धाभक्ति होगई कि मैंने जीमें ठान लिया कि अब कभी स्वदेशको न लौटूंगा। यहीं हिनहिनोंके साथ जहां पापका नाम तक नहीं है जीवनका शेष भाग बिताऊंगा। पर मेरे भोंड़े भाग्यमें उस पुण्यभूमिका निवास लिखा नहीं! हाय मनकी मनहीमें रही! जो हो, प्रभु जैसे खोद खोद कर पूछनेवालेके आगे भी मैंने अपने देशवासियोंके दोषोंको जहां तक बना न्यून करके तथा संभालके कथन किया था। ऐसा कौन है जो अपनी जन्मभूमिका पक्षपात नहीं करता है?

जब मैंने सब प्रश्नोंका उत्तर दिया तो प्रभु कुछ सन्तुष्टसे मालूम हुए। एक दिन बड़े तड़के आपने बुला भेजा। जब मैं पहुंचा तो पासही बैठनेकी आज्ञा मिली। मैं वहीं बैठ गया। इतना आदर मेरा और कभी नहीं हुआ था। आप बोले—"तुम्हारी और तुम्हारे

देशकी बात मैं सोच रहा हूं। बहुत सोचने विचारनेसे मालूम होता है कि तुम भी एक प्रकारके जानवरही हो लेकिन न जाने कैसे तुम पर अक्लका जरासा छीटा पड़ गया है। पर तुम लोग उस अक्लसे और कुछ काम न लेकर केवल अपने स्वभाविक दोषोंको बढ़ातेहो और सृष्टिके विरुद्ध नये नये पाप मनसे गढ़ते हो। परमात्माने जो कुछ शक्ति तुम्हें प्रदानकी थी सो तुम जान बूझ कर खो बैठे हो। पहले तुमको इतना अभाव न था पर तुमने अपने अभावोंको बहुत बढ़ा लिया है। अब उन्हींके पूर्ण करनेमें तुम अपना सारा जीवन नष्ट कर देते हो। अभाव पूर्ण करनेके लिये नित्य नई बात गढ़ते हो। साधारण याहूके समान भी बल या फुर्ती तुममें नहीं है। तुम पिछले पैरोंसे डगमगाते हुए चलते हो। अपने पञ्जोंको तुमने न जाने कैसे निकम्मा कर दिया है अब उनसे तुम अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते हो। धूपसे बचनेके लिये ठुड्डी पर बाल थे सो भी सफाचट हैं। याहुओंकी तरह तुम तेजी से न दौड़ सकते और न पेड़ों पर चढ़ सकते हो।

आईन कानून भी तुम्हारी बुद्धि तथा धर्म्मकी अपूर्णता हीके फल हैं। क्योंकि सज्ञान जीवोंका शासन करनेके लिये केवल बुद्धिहीकी आवश्यकता है। तुमने अपने देशके लोगोंके विषयमें जितना कहा है उससे भी तुम अपनी बुद्धिमानीका दावा नहीं कर सकते। भाई बन्दोंके मुलाहिजेसे तुमने बहुतसी बातें छिपाईं तथा जो नहीं हैं सो प्रायः कही हैं।

"तुम्हारा रङ्ग रूप तो याहुओंकासा है पर तेजी, फुर्ती, शक्ति तथा पञ्जे वैसे नहीं है। तुमने अपने आहार, विहार, चाल चलन, काम काजके बारेमें जो कुछ कहा है उससे साफ तुम्हारे मनकी वृत्तियां मालूम होती हैं। याहू लोग आपसमें एक दूसरेसे जितनी घृणा करते हैं उतनी दूसरे जानवरोंसे नहीं करते। इसका सबब भी उनकी सूरतका भद्दापनही है। अपना मुंह तो आप कोई देखता नहीं पर दूसरोंके देख कर सबही नाक सिकोड़ते हैं। तुम लोग

अपने शरीरको ढांके रहते हो सो बुरा नहीं है। इससे तुम्हारे बहुतेरे ऐब छिपे रहतेहैं। कोई किसीके ऐबोंको नहीं देख सकता है। अगर तुम लोग अपने अङ्गोंको नहीं छिपाते तो बड़ी मुश्किल होती। जिन कारणोंसे तुम लोग आपसमें लड़ते हो उन्हीं कारणों से याहू भी लड़ते हैं। अगर पचास याहुओंकी खुराक पांचके आगे फेंक दी जाय तो वह शान्त होकर खानेके बदले आपसमें लड़ मरेंगे। हर एक चाहेगा कि मैंही सब हड़प जाऊं। इसी लिये इन सबको मैदानमें चरानेके लिये एक चरवाहा रक्खा जाता है और जो घरमें रहते हैं सो अलग अलग फासले पर बांध दिये जाते हैं। जब कोई मवेशी उमर पाकर या किसी घटनासे मर जाता है तो कोई हिनहिन अपने याहुओंके मारे उसे उठाने भी नहीं पाता है। आस पासके गांवोंके याहू उस लाशको लेनेके लिये दल बांध कर चढ़ दौड़ते हैं। उन दलोंमें वैसाही युद्ध होता है जैसा तुमने अपने यहां कहा है। पञ्जोंसे आपसमें वह सब खूब नोच खसोट करते हैं पर मुश्किलसे कोई किसीको मार सकता है क्योंकि तुम लोगोंकी तरह उनके पास कोई हथियार नहीं है। कभी कभी आस पासके याहुओंमें खूब घनघोर संग्राम होता है पर उसका कुछ कारण दिखाई नहीं पड़ता। एक दलवाले दूसरे दलवालों पर चढ़ाई करनेका मौका ढूंढ़ा करते हैं। मौका पातेही अचानक उन पर टूट पड़ते हैं। पर जब मामला बेढब देखते हैं तो लौट आते हैं। जब लड़नेके लिये कोई शत्रु नहीं मिलता है तो यह आपसहीमें घमसान मचा देते हैं। इसीको तुम्हारी भाषामें—'सिविलवार' (अन्तर्युद्ध) कहते हैं।

यहां कई स्थानोंमें एक प्रकारके चमकीले पत्थर होते हैं जो कई रङ्गके हैं। याहू इन पत्थरोंको बहुतही पसन्द करते हैं यहां तक कि अगर कोई पत्थर भूमिमें भी गड़ा हो तो उसे नहीं छोड़ते हैं। दिन भर पञ्जोंसे मट्टी खोद कर पत्थर निकालही लेते हैं। फिर छिपा कर मान्दमें जमा करते हैं। तो भी उनको चैन नहीं

होता। उन्हें यही खटका लगा रहता है कि कोई उन पत्थरों को चुरा न ले। इसीसे वह अपने खजानेकी रखवाली जी जानसे करते हैं। मैं नहीं कह सकता कि क्यों याह्न लोग इन पत्थरोंके लिये जान देतेहैं और उनका क्या काम इनसे निकलता है। शायद तुम लोगोंकी तरह याह्नभी लालची होतेहैं। एक बार मैंने परीक्षाके लिये एक याह्नके पत्थरोंको चुपचाप उसकी मान्दसे उठवा मंगाया। जब उसने अपने खजानेको खाली पाया तो लगा बड़े जोरसे डाढ़ें मार कर रोने। उसके रोनेकी आवाज सुन कर सब याह्न इकट्ठे होगये। वह झुँझला कर सबको नोचने खसोटने लगा। खाना पीना सोना सब छोड़कर चुप चाप मन मलीन तनछीन होकर बैठा रहता था। जब मैंने फिर चुपकेसे उसके पत्थर जहांके तहां रखवा दिये तब वह तुरत अच्छा होगया। अब वह मजेमें सब काम काज करता है लेकिन पत्थरोंको कहीं दूसरी जगह छिपा आया है।

"जहां यह चमकीले पत्थर बहुतायतसे होते हैं वहां अड़ोस पड़ोसके याह्न अकसर जबरदस्ती घुस कर लूट पाट मचाते हैं बस भयङ्कर युद्ध ठन जाता है और खूब मार काट होती है।

और यह तो साधारण बात है कि जब दो याहुओंको खेतमें एक पत्थर मिल जाता है तब वह परस्पर लड़ने लगते हैं। इतने में एक तीसरा उसे लेकर रफू चक्कर होता है। तुम्हारे यहांके मुकद्दमोंकी भी बस यही गति है।" अपने लोगोंकी मान रक्षाके लिये यहां पर प्रभुकी हांमें हां मिलानाही मैंने उचित समझा पर वास्तवमें यह बात नहीं है। क्योंकि वहां तो मुद्दई मुद्दालेह उस पत्थरके सिवा और कुछ नहीं खोते परन्तु यहां जब तक मुद्दई या मुद्दालेहके पास एक कौड़ी भी बचती है अदालत मुकद्दमेको फैसल नहीं करती। जब दोनों कङ्गाल होजाते हैं तब डिग्री या डिस-मिस करती है।

प्रभु पुनः कहने लगे—"याह्न बड़ेही पेटू होते हैं न जाने इनको कैसी भूख है। घास पात, फल मूल, सड़ा गला मांस जो

कुछ इनके सामने आता है सबको भकोस जाते हैं। पेटहोके कारण याहू ऐसे घृणित होगये हैं। इन लोगोंकी प्रकृति भी विलक्षण है। यह घरकी बढ़ियासे बढ़िया चीजको पसन्द नहीं करते पर बाहरसे जो कुछ चुरा कर या लूट कर लाते हैं उसे बड़े प्रेमके साथ खाते हैं। अगर कहीं बड़ा शिकार हाथ लगा तो फिर क्या पूछना है? इतना खायंगे कि पेट फटने लगेगा। पर यह लोग एक जड़ी भी ऐसी जानते हैं कि जिसके खातेही सब चीजें आपही निकल जाती हैं।

एक तरहकी जड़ी और है जो बहुत मुशकिलसे मिलती है। इस जड़ीमें खूब रस होता है। याहू बड़े चावसे इसको पीते हैं। शराबसे जो दशा तुम लोगोंकी होतीहै वही इन सबकी उस रससे। रस पान कर याहू गण आपसमें लिपटते हैं, बकोटते हैं, भूंकते हैं, दांत निकालते हैं, किलकारी मारते हैं, झूमते हैं, चलते हैं, गिरते हैं, पड़ते हैं और फिर टांग फैलाकर कीचड़में सो जातेहैं।"

सचमुच वहां याहुओंके सिवा और कोई बीमार नहीं पड़ता है सो वह भी अपने यहांके घोड़ोंसे बहुत कम। यह बड़े मैले और पेटू होते हैं बस इसीसे इनके बीमारियां भी होती हैं। इन बीमारियोंका कोई खास नाम नहीं है। साधारणतः यह 'याहूके रोग' के नामसे प्रसिद्ध हैं। इनकी दवा यही है कि इनके मलमूत्रको मिला कर जबरदस्ती इनके मुंहमें डाल दिया। इससे फायदा भी खूब होता है। सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त मैं चाहता हूं कि इस दवाका प्रचार मेरे देशमें भी होजाय।

प्रभुने पुनः कहना आरम्भ किया—"लिखने पढ़ने, राजकाज चलाने, कारीगरी और दस्तकारीमें तो हमारे और तुम्हारे यहांके याहू बराबर नहीं मालूम होते। जिन विषयोंमें तुम्हारा उनका स्वभाव मिलता है आज उन्हींकी कुछ बातें कहता हूं। मैंने सुना है कि याहुओंके गरोहोंमें एक एक सरदार होता है। सबसे बदसूरत और शैतान याहूही सरदार बनाया जाता है। हर एक

सरदारके पास एक एक मुसाहिब रहता है जो सब बातोंमें सरदार होके समान होता है। सरदारके तलवे चाटना और याहू स्त्रियां उसकी मान्दमें पहुंचानाही मुसाहिबका काम है। सरदार प्रसन्न होकर इनाममें गदहेके मांसका एकाध टुकड़ा कभी कभी दे देता है। शेष याहूगण मुसाहिबसे अत्यन्त घृणा करतेहैं। इसीसे विचारा डरके मारे सदा सरदारकी देहसे चिपटा रहताहै। जब तक अधिक दुष्ट याहू नहीं मिलता तब तक पुराना मुसाहिब बना रहता है। उसके मिलतेही पुरानेको धता बताई जाती है। फिर बेचारे पर बड़ी कड़ी पड़ती है। उस गरोहके सब छोटे बड़े, और मर्द, बूढ़े जवान याहू दल बांध कर नये मुसाहिबके साथ आते हैं और पुराने मुसाहिबको सिरसे पैर तक मलमूत्रसे भर देते हैं। अब तुम्हीं बता सकते हो कि तुम्हारे यहांके मुसाहिबों और प्रधान मन्त्रियोंसे यह बात कहां तक मिलती जुलती है।"

इस विद्वेष पूर्ण आक्षेपके उत्तर देनेका साहस मुझे नहीं हुआ। एक साधारण कुत्तेकी बुद्धिसे भी जो अपने झुण्डके सरदार कुत्तेको आवाज पहचान कर धावा करता है और कभी चूकता नहीं आदमियोंकी बुद्धिको प्रभुने हेय समझ लिया! हा हन्त!!

प्रभु फिर बोले—"याहुओंकी कुछ बातें बड़ी विचित्र हैं पर तुमने तो अपने देशका हाल कहते समय उस विषयमें कुछ कहाही नहीं। अच्छा सुनो! और जानवरोंकी तरह याहू नारियों पर सब याहू नरोंका समान अधिकार है। पर अन्तर यही है कि याहू स्त्रियां पैर भारी होने पर भी नरोंको बुलाती हैं और पुरुष लोग आपसमें जिस प्रकार लड़ते झगड़ते हैं उसी प्रकार स्त्रियोंसे भी। यह दोनों चालें ऐसी गन्दी हैं कि कोई इन्हें पसन्द नहीं करता है। सब जीव जन्तु साफ सुथरा रहना चाहते हैं पर हमारे याहूजीको गन्दगीही पसन्द है। दुष्ट भी आप परले सिरेके होते हैं।"

इन दोनों बातोंका अगर कोई मुंहतोड़ जवाब होता तो मैं जरूर देता पर क्या करूं कुछ जवाब मिला नहीं इससे चुप होरहा।

अगर एक सूअर भी वहां मिल जाता तो मैं जरूर आदमियोंकी हिमायत करता पर भाग्यके दोषसे वह भी वहां न मिला। बाराह याहूओंसे चाहे सुन्दर हो पर स्वच्छतामें तद्रूपही है। प्रभु उसका मैला खाना और कीचमें लोटना पोटना देख लेते तो वह भी इस बातको अवश्य स्वीकार करते।

प्रभुने अपने नौकरोंसे यह भी सुनाथा कि कभी कभी कोई याहू एक कोनेमें लेट कर भूंकता है, कराहता है और जब कोई पास जाता है तब गुर्राता है वह देखनेमें खूब मोटा ताजा मालूम होता है पर कुछ खाता पीता नहीं। नौकरोंको भी मालूम न हुआ कि वह क्यों ऐसा करता है। इसके आराम करनेको बस एकही दवा है वह यह कि उससे खूब कड़ी मिहनत लेना। मेहनतके बाद वह आपही होशमें आजाता है। मैं प्रभु को यह बात सुन कर चुपका होरहा। बोलनेसे शायद अपने लोगोंकी कुछ बुराई हो बस इसी ख्यालसे मैं कुछ न बोला। आलसी, विलासी और धनिकोंके रोगका कारण अब मुझे मालूम होगया। इन लोगोंसे भी खूब परिश्रम कराना चाहिये, परिश्रमके द्वारा इनको आराम करनेका भार मैं लेता हूँ।

प्रभुने यह भी कहाथा कि याहू स्त्रियां अकसर नदीके तीर या झाडियोंके पीछे खड़ी होकर आगे जानेवाले जवान याहुओंसे आंखें लड़ाती हैं। चोंचलेके साथ कभी प्रगट होती हैं और कभी छिप जाती है। उस समय उनकी देहसे बड़ी गन्दी बू निकलती है। और जब कोई मर्द पीछा करता है तो धीरे धीरे आगे बढ़ जाती हैं मगर पीछे फिर फिर ताकती भी जाती हैं। नखरेसे अपने डर जानेका भी स्वांग लाती हैं। इन ढकोसलोंके बाद वह सब सुबीते की उन जगहोंमें पहुंच जाती हैं जहां वह जानती हैं कि वह पीछा करनेवाला भी आपहुंचेगा।

उन सबके बीचमें अगर कोई ऊपरी औरत आ पड़ती है तो चार पांच जनी उसे घेर कर खब दिक करती हैं। कोई घूरती है

कोई किचकिचाती है, कोई मुंह बनाती है और कोई उसकी सारी देहको सूँघती है। फिर नाक भौंह सिकोड़ कर सब चल देती हैं।

प्रभुने देखी या सुनी हुई जो बातें कहीं उनमें शायद कुछ नोन मिर्च उन्होंने जरूर लगाया होगा। जो हो मुझे यह जानकर बड़ाही आश्चर्य और दुःख हुआ कि कामेच्छा, कुलटापन, निन्दा और चबाव करना स्त्रियोंका स्वाभाविक धर्म्म है।

जिन दिनों बात चीत होती थी मेरे मनमें बराबर यही खटका लगा रहता था कि प्रभु उन अस्वाभाविक दोषोंका कलङ्क कहीं याहुओं पर न लगा बैठें जिनमें हमारे स्त्री पुरुष साधारणतः लिप्त रहते हैं। पर प्रभुने इस विषयमें कुछ नहीं कहा इससे मालूम होता है कि प्रकृतिदेवीने यह सब नहीं सिखाया है यह सब हमारे मिथ्य और ज्ञान विज्ञानहीका फल है।

अष्टम परिच्छेद।

पाठकगण! मेरे प्रभुजी आखिर घोड़ेही तो ठहरे उन्हें हम मनुष्यों के चाल व्यवहारसे क्या मतलब? पर याहुओंकी बाबत उन्होंने जो कुछ कथन किया सो मुझ पर या मेरे देशवालों पर मजेमे घटता था। मैंने सोचा चलो मैं भी याहुओंसे मिल कर कुछ नई नई बातें निकालूं। इसलिये मैं प्रभुसे पूछ कर अकसर आस पासके याहुओंकी जमातमें जाता था। इन जघन्य जीवों पर मेरी अपार घृणा देख करही प्रभुको विश्वास था कि इनकी सङ्गत मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है। इसीसे जब मैं पूछता तब वह आज्ञा दे देते थे। सिर्फ यही नहीं हिफाजतके लिये एक नौकर घोड़ेको भी साथ कर देते थे जो बड़ा सच्चा और स्वभावका अच्छा था। अगर यह न होता तो मैं ऐसी जोखिमकी जगहमें जानेकी हिम्मत भी नहीं करता। क्योंकि इन दुष्टोंने वहां पहुंचने पर पहले कैसा कुछ सताया था सो मैं पाठकोंसे आगे निवेदन कर चुका हूं। इसके

बाद भी दो चार बार मैं इनके चङ्गुलमें फंसते फंसते बच गया हूं। उस समय मेरे पास कटार भी न था पर परमात्माने कुशल की। पीछे इन सबने यह समझ लिया कि मैं भी उन्हींकी जातिका हूं। मैं अपने रक्षकके सामने अकसर बाहें तथा छाती खोल कर उन्हें दिखलाता था। वह सबके सब हिम्मत करके मेरे कुछ पास आते और बन्दरोंकी भांति मेरी नकल करते थे। बनके कव्वे किसी पालतू कव्वेको टोपी और मोजे डाटे देख कर जैसे कां कां करते हैं वैसेही मुझे देख कर वह करते थे।

याहू लड़कपनहीसे बड़े तेज होते हैं। एक बार मैंने याहूका एक बच्चा जो तीन वर्षकाथा पकड़ लिया। मैंने पुचकार कर उसको बहुतेरा चुप करना चाहा पर वह क्यों चुप होने लगा ? वह लगा बड़े जोरसे चीख मारकर रोने और हबकने। आखिर मैंने आजिज होकर उसे छोड़ दिया। इतनेमें उसकी रुलाई सुन कर बहुतसे बूढ़े याहू जमा होगये। बच्चा भागही गया था और रक्षक घोड़ा वहीं खड़ा था इससे मेरे पास आनेका साहस किसीको नहीं हुआ। उस बच्चे के बदनसे नेवले और लोमड़ीसे भी बदतर गन्ध निकलती थी। उस दुर्गन्धको नाक सह नहीं सकती थी। हां एक बात कहना मैं भूलही गया वह यह कि जब मैं उस दुष्ट बच्चे को हाथमें लिये था उसने मेरी सारी पोशाक मूतसे खराब करदी। उसके पेशाबका रङ्ग पीला था। भाग्यसे निकटही एक सोता बह रहा था। उसमें जाकर मैंने कपड़ोंको खूब अच्छी तरहसे धो डाला जब तक कपड़े सब सूखे नहीं प्रभुके सामने जानेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी।

जो कुछ मैंने देखा भाला, उससे मालूम होता है कि याहूगण शिक्षा ग्रहण करनेमें सब जानवरोंसे गये बीते हैं। बोझ ढोने या गाड़ी खेंचनेके सिवा यह और कुछ नहीं कर सकते हैं। इसका कारण इनका दुराग्रहही है। यह अत्यन्त धूर्त्त, दुष्ट, विश्वासघातक तथा प्रतिहिंसक होनेके अतिरिक्त बड़ेही बली, परिश्रमी मगर

डरपोक होते हैं। उद्दत भी परले सिरेके हैं। नीचता और निष्ठुरता तो इनमें कूट कूट कर भरी हुई है। लाल बालवाले औरों की अपेक्षा अधिक कामी और दुष्ट होतेहैं पर बल और फुर्तीमें भी सबसे चढ़े बढ़े होते हैं।

छिनछिन लोग उपस्थित कामोंके लिये कुछ याहुओंको घरके पासही झोंपड़ोंमें रखते हैं। बाकी चरनेके वास्ते मैदानमें भेज दिये जाते हैं। वहां वह सब जड़ें खोद कर खाते तथा घास चरते हैं। कभी कभी मुर्दों और चूहोंको भी ढूंढ़ कर बड़े चावसे खाते हैं। नखसे बड़े बड़े बिल खोद कर सोते हैं। औरतें अपने बच्चों को लेकर सोतीहैं इससे उनके बिल मर्दोंकी अपेक्षा बड़े होते हैं।

मेडकोंकी तरह वह लोग बचपनहीसे तैरना जानते हैं और जलमें बहुत देर तक डुबकियां मार कर रह सकते हैं। मर्द मछलियां पकड़ते और औरतें बच्चोंके लिये घर लेआती हैं इस समयको एक अनोखी कहानी सुनाता हूं आशा है पाठक क्षमा करेंगे।

एक दिन मैं टहलनेके लिये घरसे निकला। साथमें रक्षक भी था। उस दिन गर्मी भी बहुत जोरकी पड़ी थी। मैं रक्षकसे पूछ कर निकटहीकी एक नदीमें नहाने गया। मैं एक दम नग्न हो कर नदीमें धीरे धीरे उतर गया। रक्षक राम भी मुझे निरापद समझ कर कुछ दूर पर हरी हरी घास चरने लगे। संयोगसे एक याहू नारी तीर पर खड़ी यह सब देख रही थी। वह न जाने क्यों मत्त होकर धमसे पानीमें कूद पड़ी और दौड़ कर बेतरह मुझसे चिपट गई। मैं तो हक्का बक्कासा होगया। ऐसी दशा मेरी कभी नहीं हुई थी। आखिर मैं बड़े जोरसे चीख उठा। मेरी आवाज सुन कर रक्षक सरपट दौड़ आया। इतनेमें वह चाण्डालिन मुझे छोड़ कर दूसरे किनारे पर जा धमकी। अगर रक्षक न आता तो मेरा पिण्ड वह कदापि न छोड़ती। जब तक मैं कपड़े बदलताथा वह बराबर मेरी ओर देख कर भूंकती रही।

मेरी यह दुर्दशा सुन कर प्रभु और प्रभुके घरवालोंको तो एक

दिल्लगी होगई और मैं लाजके मारे मरा जाता था। अब मैं याहू होनेसे इनकार नहीं कर सकता था। जब याहुनी याहू समझ कर मुझसे चिमट गई तो मैं याहू नहीं तो क्या हूं? उसके बाल भी लाल नहीं थे कि मुझे कुछ कहनेको जगह मिलती क्योंकि लाल बाल कामुकताका चिन्ह है यह मैं पहलेही कह आया हूं। उसके बाल तो जूतेकी तरह काले थे और सूरत भी ऐसी कुछ भद्दी न थी जैसी और याहुनियोंकी होतीहै। जहां तक मैं समझता हूं उसकी उमर ग्यारह सालसे ऊंची नहीं थी।

मैं ह्विनह्विनके देशमें तीन साल रहा। पाठक चाहते होंगे कि मैं भी अन्यान्य यात्रियोंके सदृश वहांवालोंके रहन सहन तथा चाल चलनका कुछ वर्णन करूं। सो मैं अवश्य करूंगा क्योंकि जब मैं वहां था तब इन विषयोंके जाननेके लिये विशेष ध्यान दिया था।

ह्विनह्विन लोग स्वभावहीसे धर्म्मपरायण होते हैं। सज्ञान जीवों में पापाचार क्या है इतना तक वह नहीं जानते। बुद्धिको उन्नत करना तथा उसके अनुसार चलनाही उनका मुख्य उद्देश्य है। वह सब हम लोगोंकी तरह बुद्धिके द्वारा किसी विषयके दोनों पक्षों पर विवाद करनेमें चतुराई नहीं दिखाते और न बुद्धिको तर्क वितर्क करनेकी वस्तुही समझते हैं। बुद्धि यदि स्वार्थादिसे मिश्रित दूषित और कलुषित हुई तो तुरतही सबका निर्णय होजाता है। "अपनी अपनी सम्मति" का क्या अर्थ है या कोई विषय विवादके योग्य कैसे हो सकता है सो समझनेमें प्रभुको कितनी कठिनाई पड़ी वह मुझे याद है। जिन बातोंको हम निश्चय जानते हैं केवल उन्हींको हम बुद्धिके द्वारा ग्रहण या परित्याग कर सकते हैं। बुद्धि के बाहर हम कुछ नहीं कर सकते। इस कारण सन्दिग्ध विषयों में वितण्डावाद, वाग्युद्ध विवाद और हठ करना ह्विनह्विन नहीं जानते हैं। जब मैं अपने प्रकृति विज्ञानकी भिन्न भिन्न प्रथाओंको समझाता तो वह हंस कर कहतेथे कि जो प्राणी ज्ञानी बनता है वह दूसरोंके कल्पित ज्ञानके भरोसेही कूदता है और वह ज्ञान

यथार्थ होने पर भी इन विषयोंमें कुछ काम नहीं कर सकता है। वह सुकरातके उन विचारोंको जो अफलातूं लिख गया है अच्छी तरह मानते थे। यह सुकरातके लिये गौरवकी बात है। तबसे मुझे यही चिन्ता लग रही है कि ऐसे सिद्धान्तसे युरोपके पुस्तकालयोंको न जाने कितनी हानि पहुंची और न जाने कितने पण्डितोंके लिये यशका मार्ग बन्द हो जायगा।

मित्रता और कृपालुताही हिनहिनोंके प्रधान गुण हैं। इनके यह दोनों गुण सङ्कीर्ण नहीं विश्वव्यापक हैं। यह दूर देशके पाहुनेसे भी वही बर्ताव करते हैं जो पड़ोसीसे। यह जहां जाते हैं तमाम अपना घरही समझते हैं। शिष्टाचार और सभ्यताके तो यह घर हैं। आडम्बर जानतेही नहीं। बछेरे बछेरियोंको प्यार नहीं करते पर उनकी शिक्षाकी तरफ विशेष ध्यान देते हैं। यह भी उनकी बुद्धिका फल है। मैंने देखा है कि प्रभु पड़ौसके बालकोंको जितना प्यार करते थे अपनोंका भी उतनाही। उनका जाति प्रेम स्वाभाविक है। यह केवल बुद्धिहीका प्रभाव है कि वह लोग उच्च कोटिके धर्म्मात्माओंको श्रेष्ट मानते हैं।

हिनहिनियां एक बछेरा और एक बछेरी जन कर हिनहिनोंसे मिलना छोड़ देती हैं। अगर कहीं संयोगसे किसीका एक बच्चा मरगया तो वह फिर मिल लेतीहैं। यह आफत कहीं उस हिनहिन पर आपड़ी जिसकी हिनहिनी ठण्ठ होचुकी है तो कोई दूसरा हिनहिन अपना एक बच्चा उसे दे देता है और अपने लिये एक और पैदा कर लेता है। देशमें अश्व संख्या अधिक बढ़ने न पावे इस बातका वह सब खूब ख्याल रखतेहैं। नीचे दरजेके हिनहिन जो नौकर चाकर बनाये जाते हैं इन नियमोंके उतने अधीन नहीं हैं। यह सब छ: छ: बच्चे तक पैदा कर सकते हैं।

हिनहिन लोग व्याहके कामको बड़ी सावधानीसे करते हैं। बेमेल व्याह करके सारी जातिको वर्णसङ्कर बनाना नहीं चाहते हैं। व्याहके समय हिनहिनोंमें बल तथा हिनहिनियोंमें सुन्दरता

मुख्य करके देखी जाती है। प्रेमके लिये नहीं वंश रक्षाके लिये व्याह होता है। अगर हिनहिनी बलमें अधिक हुई तो हिनहिन भी सुन्दर ढूंढ़ा जाता है।

कोर्टशिप, प्रेम, प्रेमका उपहार, खोधन आदि वह कुछ नहीं जानते यहां तक कि उनकी भाषामें इनके लिये कोई शब्द नहीं है। युवक हिनहिन और हिनहिनी भेंट होतेही आपसमें मिल जाते हैं। इसमें किसी प्रकारकी रोक टोक नहीं है। सज्ञान जीवोंके लिये इस तरह मिलना वह आवश्यकीय समझतेहैं। विवाह भङ्ग तथा व्यभिचार वहां कभी सुननेमें नहीं आया। हिनहिन और हिनहिनी ईर्षाद्वेष, अनुराग, कलह और असन्तोष रहित होकर जीवन व्यतीत करते हैं। जो मित्रता और कृपालुता जाति के अन्यान्य लोगों पर प्रकाशित करतेहैं वही आपसमें भी करते हैं।

बच्चोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी बहुत सुन्दर है। हम लोगोंको उसका अनुकरण करना चाहिये। अठारह वर्ष तक बच्चे जई और दूध खाने नहीं पाते हैं। ऐसेही कभी कभी खा लेते हैं। गर्म्मीके दिनोंमें दो घण्टे सवेरे तथा दो घण्टे सांझको मैदानमें चरते हैं। उनके मा बाप भी इसी तरह चरते हैं। नौकर सब दोनों बेला एक एक घण्टा चरने पाते हैं। वह लोग अपनी अपनी घास घरही उठा लाते हैं। जब कामसे छुट्टी पाते तब सुबीतेसे खाते हैं।

बछेरे बछेरियोंको संयम, परिश्रम, व्यायाम और पवित्रताकी समान शिक्षा दी जाती है घरके कामोंके सिवा हमारे बालक बालिकाओंको भिन्न भिन्न प्रकारकी शिक्षा दी जाती प्रभु बुरा सम-झते थे। वह कहते कि इसीसे तुम्हारे देशके आधे निवासी सन्तान उत्पादन करनेके अतिरिक्त और किसी कामके नहीं हैं। ऐसे निकम्मे लोगोंके भरोसे बच्चोंको छोड़ना बहुतही बड़ी पशुता है।

लेकिन हिनहिन अपने बच्चोंको ऊंचे खड़े पहाड़ों पर तथा पथरीली भूमिमें दौड़ा कर जोरमन्दी, मजबूती और तेज चलना सिखाते हैं। और जब वह पसीने पसीने होजाते हैं तब काल।

खिला कर तालाब या नदीमें कुदाये जातेहैं। उछलने कूदने दौड़ने आदिकी योग्यता उन्हें सालमें चार दफे दिखलानी पड़ती है। जो सबमें आगे होता है उसे पारितोषिकमें एक गीत मिलता है। उस गीतमें उसीकी प्रशंसा रहती है। उस उत्सवके समय खान-सामा याहुओंकी पीठ पर दाना घास दूध लाद कर परीक्षास्थलमें लेजाते हैं। ह्विनह्विन आनन्दसे सबको खाते हैं। पीछे किसीकी तबीयत न घबराय इसलिये याहू विचारे वहांसे भगा दिये जातेहैं।

चार चार वर्षमें बसन्त ऋतुके समय ह्विनह्विनोंकी एक जातीय महासभा होती है। इसका अधिवेशन चार पांच दिन तक एक लम्बे चौड़े मैदानमें होता है जो प्रभुके घरसे बीस मीलकी दूरी पर है। प्रत्येक प्रदेशकी क्या दशा है—जई या घास कहां कैसी उपजीहै याहू या गायें भरपूर हैं या नहीं इत्यादि बातोंका वहां विचार और छानबीन होती है। जहां किसी बातका टोटा हुआ वह सर्व सम्मतिसे चन्दा करके तुरत दूर कर दिया जाता है पर ऐसी नौबत बहुत कम पहुँचती है। बालक बदलव्वलकी व्यवस्था भी यहीं होती है अर्थात् जिस ह्विनह्विनके दो बछेरेही होते हैं वह दूसरेको जिसके दो बछेरियां हैं अपना एक बछेरा देकर बदलेमें उससे एक बछेरी ले लेता है। किसीका एक बच्चा किसी कारण से मर गया और ह्विनह्विनी भी ठगठ हो चुकी है तो यहां यह भी निश्चय होजाता है कि कौन ह्विनह्विन एक बच्चा और पैदा करके हानिको पूरी कर देगा।

नवम परिच्छेद।

उस देशसे विदा होनेके लग भग तीन मास पहले घोड़ोंकी जातीय महासभाका एक अधिवेशन मेरे सामनेही हुआ था जिसमें प्रभु भी अपने प्रान्तसे प्रतिनिधि बन कर पधारे थे। आपहीने लौट कर वहांका सब पूरा हाल मुझे बताया था। उसी पुराने विषयको लेकर खूब वादानुवाद चला था। कहते थे कि ऐसा तर्क वितर्क और कभी नहीं हुआ था।

प्रश्न यही था कि याहुओंको पृथ्वीसे निर्मूल करना चाहिये या नहीं। एक सज्जनने तो बड़ी नोक झोंकसे उठ कर कहा—मित्रो ! याह्न बड़ेही मैले गन्दे और भद्दे जीव हैं। हठता, शठता, दुष्टतादि को तो यह खान हैं। सिखानेसे भी कुछ सीखते नहीं पर शैतानी जरूर करते हैं। चुप चाप हमारी गौओंका दूध पी लेते हैं—बिल्लियोंको मार कर खा जाते हैं—जई तथा घासोंको रौंद डालते हैं और अगर पूरे तौरसे रखवाली न कीजाय तो बड़ा ऊधम मचाते हैं। हम लोग बाप दादाओंसे सुनते आतेहैं कि याह्न यहांके निवासी नहीं हैं। बहुत दिन हुए जब इनका एक जोड़ा पहाड़ पर दिखलाई पड़ा था। सूर्य्यकी गर्मी कीचमें पड़नेसे यह जोड़ा उत्पन्न हुआ या समुद्रके फेनसे सो कुछ मालूम नहीं हुआ। पीछे इन दोनोंके सन्तान हुई। थोड़ेही दिनोंमें इनकी इतनी वंश वृद्धि हुई कि सारा देश याहुओंसे भर गया और हिनहिनोंको कष्ट होने लगा तब सबने याहुओंको निकाल बाहर करनेका मनसूबा बान्धा। आखिर एक दिन याहुओंका कतलआम करके उनको चारों तरफसे घेर लिया। बड़े बड़े तो काम आये और बच्चोंको हिनहिन घर उठा लाये। हर एकके दो दो बच्चे हाथ लगे थे। याहू बड़े उद्दण्ड और जङ्गली थे पर हिनहिनोंने उन बच्चोंको ठोंक पीट कर इस योग्य कर दिया है कि अब यह बोझ ढोने और गाड़ी खेंचने लगे हैं। यह बात भी बहुत ठीक मालूम होती है कि याहू इस देशके आदिम निवासी नहीं हैं। अगर होते तो हिनहिन तथा अन्यान्य जीव क्यों इनसे घृणा करते? इसलिये मैं चाहता हूं कि याहुओंका अवश्य मूलोच्छेद होना चाहिये। सज्जनो ! एक बात मुझे और कहना है। आप लोग याहुओंको पाकर गदहोंको एक दम भूल गये यह आप लोगोंने अच्छा नहीं किया। गदहे याहुओंसे सुन्दर सीधे और शान्त हैं। इनकी देहसे दुर्गन्धि नहीं निकलती। यह वैसे फुर्तीले तो नहीं मगर मेहनती और मजबूत उनसे कहीं बढ़के होते हैं। गदहोंका रेंकना चाहे खराब हो परन्तु याहुओंके भया-

तक भूंकनेसे वह लाख दरजे अच्छा है। अतएव मैं प्रस्ताव करता हूं कि याहुओंका अवश्य विध्वंस करना चाहिये।

बहुतोंने तो इस प्रस्तावका समर्थन किया परन्तु प्रभुने उन बातों की याद कर जो मैंने कही थीं एक दूसराही उपाय निकाला। आप बोले—सज्जनो! हमारे माननीय पूर्ववक्ता महोदयने जो कुछ कहा है सो बहुत ठीक है। वह दोनों याहू जो पहले पहल पहाड़ पर देखे गयेथे मैं समझता हूं समुद्रके उस पारसे आयेथे। उन्हें उनके भाइयोंने निकाल दिया होगा। जाति भाइयोंसे अलग पर्व्वत पर रहनेके कारण उनका चाल व्यवहार बिगड़ने लगा। बिगड़ते बिगड़ते एक दम बिगड़ गया। यहां तक कि वह वर्त्तमान दशाको पहुंच गये। पर उनके देशवाले ऐसे नहीं हैं। इसके सबूतके लिये मेरे पास एक "अद्भुत याहू" मौजूद है जिसे आप लोगोंमेंसे बहुतों ने देखा नहीं तो सुना जरूर होगा। वह भी अपने सङ्गियोंसे निकाला जाकर यहां तक आपहुंचा है। उसके शरीर पर दूसरे जानवरोंके बाल तथा खालको बेठन चढ़ी हुई है। वह अपनी बोली बोलता है और हम लोगोंकी भी बोली अच्छी तरहसे सीख गया है। उसने यहां तक आनेका अपना पूरा वृत्तान्त मुझे कह सुनाया है। जब वह बेठन उतार देता है तो ठीक याहू मालूम पड़ता है। अन्तर केवल इतनाही है कि उसका रङ्ग गोरा, पञ्जे छोटे तथा देहमें बाल कमती हैं। उसके कहनेसे मालूम हुआ कि उसके देशमें याहू राजा और ह्विनह्विन गुलाम हैं। उसमें सब लक्षण तो याहूके हैं किन्तु बुद्धिका तनिक लेश होनेके कारण वह कुछ सभ्य मालूम होता है। जो हो, हम सबसे वह बुद्धिमें उतना ही कम है जितना उससे हमारे याहू हैं। उसे देशके लोग ह्विनह्विनोंकी बशमें लानेके लिये उन्हें आखता करते हैं। आखता करनेकी तरकीब बड़ी सहज और बेजोखों है। श्रम करना चिवटियोंसे और घर बनाना अबाबीलोंसे हम लोग सीखते हैं। इसलिये पशुओंसे ज्ञान सीखनेमें कुछ लज्जा नहीं है। मैं चाहता

हूं कि सब जवान याहू आखता कर दिये जायं। बस इससे वह अच्छी तरह काम भी करेंगे और थोड़े दिनोंमें अनायासही उनका वंश नाश होजायगा। इधर तब तक हम लोगोंको गदहोंका वंश बढ़ानेमें दत्तचित्त होना चाहिये क्योंकि यह बड़े कामकी चीजहैं। और सबतो बारह बरसके होने पर कामके लायक होते हैं पर गदहा बिचारा पांचही सालसे काम करने लगता है।

प्रभुने जातीय महासभाका बस इतनाही हाल उस समय मुझसे कहना उचित समझा। मेरे विषयमें जो कुछ बात चीत वहां हुई थी उसे आपने छिपा रक्खा पर इसका फल मुझे बहुत जल्दी मिल गया। पाठकोंको आगे चल कर सब मालूम होजायगा। मेरे दुर्भाग्यका उदय उसी दिनसे समझना चाहिये।

हिनहिनोंकी कोई वर्णमाला नहीं है। जो कुछ अपने बाप दादाओंसे वह सुनते आते हैं वही लड़कोंको बता देते हैं। इसीसे उनकी विद्या पुराने ढङ्गकी है। जिन लोगोंमें इतना मेल मिलाप है—जो स्वभावहीसे धर्म्मानुरागी हैं—जो बुद्धिके भरोसेही सब काम करते हैं और जो दूसरी जातियोंसे कुछ सम्बन्धही नहीं रखते हैं उनके यहां कोई घटना क्यों होने लगी? फिर इतिहासके लिये माथाही क्यों खपाना पड़ेगा? यह मैं पहलेही लिख चुका हूं कि हिनहिन कभी बीमार नहीं पड़ते इस वास्ते उन्हें वैद्यकी भी जरूरत नहीं होती। तो भी वह अच्छी अच्छी जड़ी बूटियां जानते हैं। पैरोंमें या कहीं किसी तरह कुछ चोट लग जाती है तो वह उन्हीं जड़ी बूटियोंसे तुरत आराम कर लेते हैं।

चन्द्र सूर्य्यकी गतियोंके द्वारा वह वर्षकी गणना कर लेते हैं किन्तु सप्ताहादिको काममें नहीं लाते हैं। इन दोनोंकी चालोंको वह भली भांति जानते हैं तथा ग्रहणके भेदको समझते हैं। ज्योतिष में उनके ज्ञानकी बस यही पराकाष्ठा है।

काव्यमें हिनहिन सबसे बढ़े हुए हैं। उनके काव्योंमें पूर्णोपमा तथा यथार्थ वर्णनका आधिक्य रहता है। यह दोनो बातें हम लोगों

के अनुकरणके योग्य हैं। मित्रता और कृपालुता अथवा जो ह्विन-ह्विन घुड़दौड़ या कसरतमें बाजी मार लेता है उसकी प्रशंसा अश्व-काव्यका साधारण विषय है। उनके घर यद्यपि अनगढ़ हैं तथापि गर्मी सर्दीके बचावके लिये वह चोखे हैं। वहां एक तरहके पेड़ होते हैं जिनकी जड़ें चालीस बरसके बाद ढीली पड़ जाती हैं। बस तूफान आतेही वह सब गिर जाते हैं। इन पेड़ोंकी लकड़ियां बहुत सीधी तथा नोकीली होती हैं। ह्विनह्विन इन्हीं लकड़ियोंके खेमे तेज पत्थरसे जमीनमें दस दस इञ्चकी दूरी पर गाड़ कर उनके बीचमें जईकी डांटें और पत्ते लगा देते हैं बस यही उनकी दीवारें हुईं। छतें भी इसी रीतिसे पाटी जाती हैं तथा किवाड़ भी ऐसेही बनते हैं। ह्विनह्विन लोहेका व्यवहार नहीं जानते।

हाथका काम ह्विनह्विन अपने अगले सुजम्मोंसे निकालते हैं और बड़ी सफाईसे सब काम करते हैं। मैंने एक उजली घोड़ीको सूई डोरा दिया तो उसने चटपट पिरो दिया। वह सब गाय दुहते हैं, जई काटते हैं—मतलब यह कि हाथोंसे जो काम होते हैं सो सब वह करते हैं। एक प्रकारके चकमक पत्थरको रगड़ कुल्हाड़ी आदि हथियार बनाते हैं। उन्हींसे घास तथा जई काटते हैं और याहू लोग ढोकर लाते हैं। घरमें नौकर खाली कुचल कर अन्न निकालते हैं और भण्डारमें बन्द करके रख देते हैं। यह अन्न और घास वहां आपही पैदा होती है। वह काठ और मट्टीके वर्त्तन भी एक तरहके बनाते है। मट्टीके वर्त्तनोंको धूपहीमें सुखा कर पका डालते हैं।

यदि कोई दैव दुर्घटना न हुई तो ह्विनह्विन बूढ़े होकर मरते हैं। जो स्थान सबसे अप्रसिद्ध होता है वहीं वह गाड़े जाते हैं। जब कोई मर जाता है तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धव न शोक करते हैं और न हर्ष। मरनेवाला भी जरा दुःख नहीं करता। वह मरने को अपने घर जाना समझता है। किसी मित्रके यहांसे घर आने में जो दशा होती है मृत्युके समय ह्विनह्विनकी भी वही दशा होती

है। मुझे याद है प्रभुने एक बार एक अश्वको सपरिवार किसी जरूरी कामसे बुलाया। जिस समय आनेकी बात थी उससे बहुत पीछे घोड़ी अपने दो बच्चोंको लिये पहुंची। विलम्बका कारण पूछने पर उसने कहा—"आज सवेरे मेरे स्वामी अपनी पहली माता के पास गये" अर्थात् मर गये हैं। उसके चेहरे पर कुछ भी शोक या उदासी नहीं मालूम होती थी। जैसे सब प्रसन्न बदन थे वैसे वह भी थी। तीन महीनेके बाद वह बिचारी भी अपनी पहली माके पास चली गई।

हिनहिनकी आयु सत्तर पचत्तर वर्षकी होती है। कोई कोई अस्सी तक भी पहुंच जाते हैं पर बहुत कम। मरनेके कुछ हफ्ते पहलेसे वह चीण होने लगते हैं परन्तु उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता है। इस समय वह आसानीसे कहीं जा आ नहीं सकते इससे बन्धु बान्धवगण मिलनेके लिये घरही पर बहुत आते हैं। मरनेके दस दिन पहले वह याहूगाड़ी पर सबसे बदलेकी भेंट कर आते हैं। केवल इसी कामके लिये यह गाड़ी नहीं है। इस पर लंगड़े, बूढ़े तथा दूरके सफर करनेवाले चढ़ते हैं। जब वह मिलने के लिये जाते हैं तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धवोंसे बड़ी गम्भीरतासे बिदा होते हैं मानो जीवनका शेष भाग बितानेके लिये किसी दूर देशान्तरको जाते हैं। हां एक बात कहनेको छूटही गई थी कि हिनहिन अपनी मृत्युका समय हिसाब करके निकाल लेते हैं। इसमें बहुत कम भूल होती है।

मैं घोड़ोंके रीति व्यवहार तथा धर्म्म कर्म्मके बारेमें और भी कुछ कहता परन्तु इन विषयोंकी एक स्वतन्त्र पोथी अलग लिखा चाहता हूं अतएव इस प्रसङ्गको यहीं समाप्त कर अब कुछ अपनी दुर्घटना सुनाता हूं।

दशम परिच्छेद।

मैंने अपने मनके मुआफिक रहने सहनेका एक मुख्तसर सा बन्दोबस्त करलिया था। प्रभुने अपने घरसे करीब छः गजके फासले पर मेरे लिये एक छोटीसी कोठरी बनवादीथी जिसकी बनावट उसी

टेगकी सीथी। मैंने उसे लीप पीत कर दुरुस्त करलियाथा। सन तथा पत्तियोंके परोंका एक गद्दा बनाया जिस पर मैं पैर फैला कर सोता था। याहुओंके बालके जालसे अकसर चिड़ियोंका शिकार करता। इनका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता था। अपनी छुरीसे दो कुर्सियां बना ली थीं। इनके बनानेमें लाल घोड़ेसे भी कुछ मदद मिली थी। कपड़े सब फट गये तो खरहोंकी खालहीसे काम चलाया। खरहे के आकारके वहां एक प्रकारके सुन्दर जानवर होते हैं। जिनके रोएं बड़े बारीक होते हैं। इन्हींकी खालके काम चलाऊ मोजे भी बनाये थे। जूतोंके तले घिस गये तो काठके लगाये। जब ऊपर के हिस्से भी बेकाम होगये तो याहूके चमड़ेहीको धूपमें सुखा कर काममें लाया। वृक्षोंमेंसे अकसर मधु निकाल लाता और उसे रोटियोंके साथ खाता या शरबत बना कर पीता था। "मनको मनाना कुछ बड़ी बात नहीं है" तथा—"आवश्यकता पड़ने पर उपाय सूझता है" इन दोनों सिद्धान्तोंकी सत्यता मुझसे बढ़ कर कोई नहीं जान सकता है। वहां मेरा शरीर निरोग तथा चित्त शान्त रहता था। वहां न मेरे कपटी और विश्वासघाती मित्रही थे और न गुप्त वा प्रकट शत्रु। बड़े आदमियोंकी या उनके मुसाहिबोंको प्रसन्न करनेके लिये घूस देने, खुशामद करने अथवा कुटना पन करनेकी कभी वहां नौबतही नहीं आती थी। छल वा उपद्रवकी वहां कुछ आशङ्का न थी। मेरे शरीरका सत्यानाश करनेके लिये वकील वहां न थे। मेरे चाल चलनकी देख भालके वास्ते वहां कोई जासूस न था और न रुपयेके हेतु कोई झूठे झूठे मुकद्दमे गढ़ता था। वहां निन्दा, उपहास, चवाव, बलात्कार, मूर्खता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, दम्भ, पाखण्ड, अभिमानादि कुछ न था। चोर, जुआचोर, उचके, उठाईगीरे, जेबकाट, डाकू, लुटेरे इत्यादि वहां न थे और न सिफले, धूर्त्त, कुटने, भडुए, भांड़, शराबी, जुआरी तथा बकवादीही थे। न दल था न पार्टी थी और न कोई अगुआ था। वहां न कारागार, न शूली न फांसी और न कोड़े

की मारही थी। पाप करनेकी वहां कोई सामग्री न थी। बेईमान दूकानदार भी वहां न थे। कर्कसा खर्चीली और कुलटा स्त्रियां नहीं थीं। लण्ठ मगर अभिमानी पण्डित न थे विवादी, छली, स्वार्थी, शपथ खानेवाले, नीच साथी भी वहां न थे। नीच अपनी नीचताहीके कारण न सिंहासन पर बिठाये जाते और न सज्जन सज्जनता हेतु सिंहासनसे उतारेही जाते थे। वहां न लाट थे न जज थे न सारङ्गी बजानेवाले थे। और न नृत्याचार्य्यही थे—मतलब यह कि रोग शोक, पाप ताप वहां कुछ भी न था। बड़े आनन्दसे दिन कटते थे।

प्रभुके यहां भोजन करने या मिलनेके लिये अनेक छिनछिन आते थे। वह लोगजिस कोठरीमें बैठ कर बात चीत करते थे वहां मैं भी जाने पाता था। प्रभु तथा प्रभुके साथी लोग अकसर मुझसे भी वार्तालाप करनेकी कृपा दिखाते थे। जो कुछ वह पूछते उसका जवाब मैं देता या खड़ा खड़ा उनकी बातेंही सुनता था। जब प्रभु किसीके यहां जाते तो मुझे भी कभी कभी अपने साथ ले लेते थे। प्रश्नका उत्तर देनेके अतिरिक्त और कुछ बोलनेका साहस मुझे कभी नहीं हुआ। हाय! बोलनेके लिये मैंने इतना परिश्रम किया सो वृथाही गया! परन्तु मैं उन विषयोंको जो संक्षिप्त अथच उपयोगी थे—जो आडम्बर रहित शिष्टता पूर्णथे—जो शुष्क और नीरस न थे और जो बाधा, कठिनाई, उत्तेजना वा मत भेदसे शून्य थे, श्रवण करनेहीमें परमानन्द प्राप्त करता था। उन लोगोंका ख्याल है कि भेंट होने पर थोड़ी देर चुप रहनेसे बात चीतमें बहुत उत्तमता आजाती है। और यह सच भी है क्योंकि जरा चुप रहनेसे नये नये विचार मनमें उठते हैं बस वह और भी मनोहर होजाती है। मित्रता, परोपकारिता, मितव्यय तथा सुरीतिही उनके सम्भाषणके साधारण विषयहैं। प्रकृतिकी छटा, पुरानी दन्त कथा, धर्म्मकी मर्य्यादा, ज्ञानके अभ्रान्त नियम या जातीय महासभामें उठानेके योग्य किसी प्रस्ताव पर तो कभी कभी किन्तु काव्यके उच्च भावों पर

वादाविवाद होताथा। मैं कुछ अभिमान नहीं करता सत्य कहता हूं कि मेरे उपस्थित रहनेसे खूब तर्क वितर्क चलता था। क्योंकि प्रभु जब मेरा तथा मेरे देशका इतिहास अपने मित्रोंको सुनाते तब सब सब लोग बड़ी प्रसन्नतासे कथोपकथन करतेथे। वह सब क्या कहते थे सो मैं न लिखूंगा क्योंकि इससे कुछ विशेष उपकार न होगा। केवल इतनाही मैं कहा चाहता हूं कि मेरी अपेक्षा प्रभु याहुओंके स्वभावको अच्छी तरह समझते थे। वह अपने यहांके याहुओंकी योग्यता तथा कामोंको देख कर हमारे यहांके पापाचारका चित्र भली भांति खेंचते थे। वह याहुओंको अत्यन्त नीच और हेय समझते थे।

मैं मुक्तकण्ठसे स्वीकार करता हूँ कि जो कुछ थोयासा ज्ञानका लेश मुझमें है सो प्रभुके उपदेश तथा उनके मित्रोंके सत्सङ्गहीका फल है। मैं हिनहिनोंकी दृढ़ता, सुन्दरता और द्रुतगतिकी प्रशंसा करता हूं। उनके सद्गुणोंको देख कर उन पर मेरी अपार श्रद्धा भक्ति होगई है। पहले तो उनका कुछ प्रभाव मुझ पर पड़ा नहीं पर पीछे मेरा हृदय भक्ति भावसे क्रमश: बहुत शीघ्र पूर्ण होगया।

जब मैं अपने बाल बच्चोंको, इष्ट मित्रोंको, देशवासियोंको अथवा मनुष्य मात्रको याद करता तो वह भी सूरत शकल और स्वभावसे निरे याहूही मालूम होते थे अन्तर इतनाही था कि वह इन याहुओंसे शायद कुछ सभ्य मालूम पड़ते थे, उनमें बोलनेकी शक्ति कुछ विशेष थी और वह नित्य नये पाप गढ़नेके सिवा और कुछ काम बुद्धिसे नहीं लेते थे। जब कभी मैं अपना मुंह किसी गढ़हे या झरनेमें देख लेता तो चीख मार कर पीछे हट जाता था। अपने चेहरे पर आपही मुझे घृणा होने लगती थी। मैं अपना मुंह आप नहीं देख सकता था। हिनहिनां को देख कर आत्मा ठण्ढी होती थी। उनसे बोल कर चित्त प्रसन्न होताथा। रात दिन उनके सङ्ग रहते रहते मैं भी उनकी चाल ढाल की नकल करने लगा। नकल करते करते अब उसी तरह चलनेका

बहुधा अभ्यास पड़ गयाहै। मित्रगण अकसर ठट्ठा मारकर कहते हैं वाह! अब तो तुम घोड़ेकी तरह खूब दुलकी चलने लगी। पर अपनी बड़ाई इसीमें समझता हूँ। चाहे कोई हंसे या दूसे पर मैं यह कहनेसे कभी इनकार न करूंगा कि मैं घोड़ोंकी तरह बोलने को तैयार हूँ।

बड़े सुख चैनसे समय बीतने लगा। किसी प्रकारका कष्ट या अभाव वहां नहीं था। मैंने सोचा चलो अब जीवनके शेष भागको यहीं व्यतीत करूं पर—"निज सोची होती नहीं।" एक दिन बड़े सबेरे प्रभुने बुला भेजा। मैं भी चट पट उठ दौड़ा। वहां पहुँच कर प्रभुको घोर चिन्तामें मग्न पाया। उनके चेहरेसे उदासी टपक रही थी। वह कुछ कहा चाहते थे पर कह नहीं सकते थे। किस तरह बात उठनी चाहिये शायद इसी सोच विचारमें पड़े थे। थोड़ी देर चुप रहनेके बाद प्रभुने कहा—"मैं नहीं जानता मेरे कहनेका तुम क्या अर्थ लगाओगे पर मुझे विवश होकर कहना पड़ता है कि पिछली महासभामें जब याहुओंकी चर्चा चली तो कई प्रतिनिधि मुझ पर बहुत बिगड़े और बोले कि तुम याहू को अपने घरमें हिनहिनकी तरह रखते हो यह बड़ी खराब बात है। सुना है तुम बराबर उसके साथ रहते सहते तथा बात चीत करके प्रसन्न होते हो। यह काम प्रकृति और ज्ञानके विरुद्ध है। ऐसा कभी किसीने नहीं किया है और न ऐसी घटना पहले कभी सुननेमें आई है। इस लिये उस याहूको चाहे अन्यान्य याहुओंके साथ रक्खो या उससे कह दो कि वह अपने देशको चला जाय। इस पर बहुतोंने कहा नहीं, उसका यहांसे चला जानाही ठीकहै। वह रहेगा तो बड़ा उत्पात मचावेगा। उसमें कुछ बुद्धिका लेश भी है। इससे वह सब याहुओंको बहकाकर जङ्गल पहाड़ोंमें लेजायगा और रातको दल बांधकर हमारे मवेशियों पर चोट करेगा क्योंकि यह सब बड़ेही पेटार्थी होते हैं और मेहनतसे जी चुराते हैं। इस वास्ते उसको यहांसे धता बतानाही अच्छा है।"

प्रभुकी बातें सुन कर मेरा माथा ठनका पर मैं कुछ न बोला।

वह फिर कहने लगे—"अब मैं क्या करूं ? महासभाके परामर्शको पालन करनेके लिये हिनहिन लोग मुझे नित्य दबातेहैं अब अधिक टाल मटोल नहीं कर सकता। मैं जानता हूं समुद्रको तैरकर पार करना असम्भव है इसलिये मेरी राय है कि एक छोटीसी नाव बना लो उसी पर अपने देशको चले जाओ। इसमें मेरे नौकर तथा पड़ोसी लोग भी तुम्हारी मदद करेंगे। मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हूं तुमने जहां तक बना खोटी लतोंको छोड़कर हिनहिनकी नकल की है। मेरी इच्छा तो यहीथी कि जन्मभर तुमको अपने साथ रक्खूं पर क्या करूं लाचारीहै। यहां समझानेके सिवा किसीको लाचार करनेका दस्तूर नहीं है पर जो ज्ञानी हैं सो ज्ञानके विरुद्ध कोई काम क्यों करेंगे।"

इतना सुन कर मेरे सिर पर मानो वज्र गिर पड़ा। नेत्रों के आगे अन्धकार छा गया। मैं मूर्छित होकर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा। जब मूर्छा गई तो प्रभु बोले—"तुम जी उठे! मैंने तो जाना तुम मर गये।" हिनहिन मूर्छित होना नहीं जानते क्योंकि उनके चित्तमें इतनी दुर्बलता नहीं है। मैंने धीमे स्वरसे कहा—"मरना तो इससे लाख दर्जे अच्छा था। मैं आपकी सभाका या मित्रोंको कुछ दोष नहीं दे सकता पर अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार कहता हूँ कि इस जीनेसे मरनेहीमें सुख है। मैं एक मील भी तैर नहीं सकता और समुद्रका पहला किनारा भी यहांसे सैकड़ों मील दूर होगा। नाव बनानेके लिये जिन जिन चीजोंकी दरकार है सो यहां मिलती नहीं पर तो भी आपकी आज्ञा पालनेकी चेष्टा करूंगा। यह काम सहज नहीं है इसके वास्ते मुझे उचित समय मिलना चाहिये। यदि मैं अपने देश पहुँच जाऊंगा तो आप लोगोंके सद्गुणों का कीर्त्तन कर अपनी जातिका बहुत कुछ उपकार करूंगा।"

वहांका रङ्ग ढङ्ग देख कर मेरा जी उदास होगया। पीछे न जाने और क्या आफत आवे यह विचार कर मैंने वहांसे नौ दो ग्यारह होनाही उचित समझा। प्रभुने कृपा कर नाव बनानेके लिये दो महीनेका समय दिया। मददके लिये मैंने लाल घोड़ेको

मांग लिया क्योंकि वह मुझ पर बहुत दया करता था। उसके मिल जानेसे फिर और किसीकी सहायता दरकार न रही।

लाल घोड़ेको लेकर मैं समुद्र तटके उस स्थानमें पहले गया जहां मेरे साथियोंने मुझे छोड़ दिया था। मैं एक टीले पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। ईशान कोणमें एक छोटासा टापू दिखाई पड़ा। जेबसे दूरबीन निकाल कर देखा तो साफ मालूम हुआ कि वह लग भग पन्द्रह मीलके फासले पर है। लेकिन घोड़ारामको केवल नील आकाशही दिखाई दिया क्योंकि वह यही जानता था कि हमारे देशके सिवा और कोई देशही नहीं है। इसीसे समुद्र स्थित दूरवर्त्ती वस्तुओंके देखनेमें उसकी दृष्टि काम नहीं कर सकती थी। खैर, उस टापूको देख कर मैंने विचारा कि पहला मुकाम तो यहीं होगा आगे भगवानका भरोसा।

हम लोग घर लौट आये। पासहीके एक जङ्गलसे देवदारकी डालियां काट लाये जो कुछ मोटी और कुछ छड़ीकी भांति पतली थीं। मैंने तो अपने चाकूसे और लाल घोड़ेने पत्थरके औजारसे लकड़ियां काटींथीं। अब बहुत विस्तार न कर मैं खुलासा कहता हूं कि छः हफ्तेमें लाल घोड़ेकी मददसे डोंगी बन कर तैयार होगई। इसके ऊपर याहुओंके चमड़ेकी खोल सीकर चढ़ाई। पाल भी उन्हीकी खालकी बनाई। जहांतक बना जवान याहुओंकी खालसे काम लिया क्योंकि बुड्ढोंकी खाल बहुत मोटी और चिमड़ी होतीहै। चार डांड़ भी मैंने बना लिये थे। खानेके लिये मांस पकाकर धर लिया था तथा पीनेके लिये एक मटकी जल और एक मटकी दूध।

कूच करनेके पहले डोंगीकी परीक्षा एक बड़े तालाबमें हुई। जहां जो कसर दिखाई पड़ी सो सब दुरुस्त करली। जब सब तरहसे वह ठीक होगई तो याहुओंने उसे गाड़ी पर लाद कर समुद्र के किनारे पहुंचा दिया। हिफाजतके लिये साथ लाल घोड़ा भी गया था।

जब सब सामानसे लैस होगया तब प्रभुकी स्त्री तथा और सब लोगोंसे विदा होकर मैंने सिद्धगणेश किया। उस समय मेरी

आंखें डबडबाई हुईं तथा गला भरा हुआ था। तमाशा देखने के लिये या शायद मुझ पर कुछ कृपा करके प्रभु भी समुद्र तट पर्यन्त पधारे थे। आपके साथ और भी कई हिनहिन थे। ज्वारके लिये मुझे एक घण्टेसे ज्यादे बैठना पड़ा। जब ज्वार आगई तब फिर मैंने प्रभुको प्रणाम किया। मैं उनके खुरारविन्द चुम्बन करनेके लिये जब झुकने लगा तो प्रभुने स्वयं उसे उठा कर मेरे मुंहके सामने कर दिया। इस बातके लिख देनेसे मैं जानता हूं मेरी बड़ी छीछा लेदर होगी। लोग इसको असम्भव मानेंगे। वह यही कहेंगे कि इतना बड़ा आदमी गलीवर जैसे तुच्छ जीवकी इतनी खातिर नहीं कर सकता है। लेकिन जो हिनहिनोंकी सज्जनता और सभ्यता भली भांति जानता होगा, वह ऐसा कभी न कहेगा। कुछ यात्री विशेष सम्मान पाते हैं तो उसकी शेखी बघारनेके लिये कैसे तैयार रहते हैं सो भी मैं जानता हूं।

शेषमें हिनहिनोंको नमस्कार प्रणाम करके मैं डोंगी पर जा बैठा। वायु भी अनुकूल थी। मैंने भगवानका ध्यान कर डोंगी को भाग्यके भरोसे छोड़ दिया।

एकादश परिच्छेद।

सन् १७१४-१५ ईस्वीको १५ वीं फरवरीके सबेरे नौबजे मैं वहां से रवाना हुआ था। वायु बहुतही अनुकूल थी। पहले तो मैंने केवल डाण्डोंसे काम लिया पर पीछे पालको भी तान दिया। ज्वार का जोर थाही डोंगी घण्टेमें साढ़े चार मीलके हिसाबसे जाने लगी। जब तक मैं एकदम ओझल न होगया प्रभु अपने सङ्गियों समेत तीर पर बराबर खड़े रहे। लाल घोड़ा जो मुझे बहुत चाहता था, बारम्बार पुकारकर कहता था—"ह्नु इल्ला नीहा मजाह याहु" अर्थात् होशियारीसे जाना सुन्दर याहू!

पाठको! क्या सोचते २ क्या होगया! मैंने तो सोचाथा कि अब फिर इङ्गलैण्डका मुंह न देखूंगा और न किसीसे कुछ सम्पर्क रक्खूंगा यिहीं पवित्रात्मा हिनहिनोंके पवित्र धाममें जीवन शेष करूंगा पर

मनकी मनमें रही। प्रभुके आगे मैं बहुत रोया गाया पर सब वृथा हुआ अन्तमें हताश होकर वह पुण्य भूमि त्यागनीही पड़ी। अब क्या करूं ? स्वदेश जाकर याहुओंके समाज तथा राज्यमें रहनेकी तो तनिक भी इच्छा नहीं होती थी। यदि इङ्गलेण्डके प्रधान मन्त्री का पद मलता तो भी वहां जाना मुझे स्वीकार न था। मैं किसी छोटे मोटे उजाड़ टापूमें जहां याहुओंकी गन्ध भी न हो बास करना चाहता था। यदि ऐसा निर्जन स्थान मिल जाता तो उसे प्रधान मन्त्रीके पदसे बहुत बड़ा समझता क्योंकि वहां सांसारिक पाप तापोंसे मुक्त होकर एकान्तमें पुण्यात्मा छिनछिनोंके सद्गुणोंका सानन्द ध्यान करता तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने विचारों में निमग्न रहता।

जब मेरे साथियोंने गुट्ट बांध कर मुझे कैद कर लियाथा तो मैं कई हफ्ते तक अपने कमरेमें बन्द रहा था यह मैं लिख आया हूं पाठकोंको शायद याद होगा। उस समय जहाज किस राहसे कहां जाता था मुझे कुछ भी मालूम न था। जिस समय मैं जहाजसे निकाला गया उस समय भी किसीने कुछ नहीं बताया। परन्तु उन सबकी आपसकी बातें सुन कर मैंने अनुमान किया था कि जहाज उत्तमाशा अन्तरीपके दक्षिण या अग्निकोणकी ओर है। तथा मेडेगास्कर द्वीपको जाता है। मेरा यह अनुमान चाहे ठीक न हो तो भी न्यूहालेण्ड या उसके आस पासके किसी टापूमें पहुंचनेके इरादेसे मैं सीधा पूर्व दिशाको जाने लगा। सन्ध्याको एक छोटीसी पहाड़ीके निकट जा पहुंचा। इसमें तूफानके जोरसे एक कोलसा बन गया था। उसीमें डोंगी रख कर मैं पहाड़ी पर चढ़ा तो पूर्व दिशामें भूमि दिखाई पड़ी जो उत्तरसे दक्खिनको फैली हुई थी। रातको वहीं डोंगीमें सोरहा सवेरे उठ कर फिर उसी भूमिकी तरफ चल पड़ा। कोई सात घण्टेमें निउ-हालेण्ड * के पूर्व दक्षिण प्रान्तमें जा पहुंचा।

* आष्ट्रेलिया तथा उसके आस पासके द्वीप।

जहां मैं उतरा वहां कोई मनुष्य दिखाई न पड़ा। मेरे पास कोई हथियार नहीं था इससे आगे बढ़नेकी हिम्मत न पड़ी। वहीं किनारे पर जो घोंघे सीप मिल गई वह कच्चोही चबा गया। शायद कोई देखले इस डरसे मैंने आग भी नहीं जलाई। वहां मैं तीन दिन रहा। साथमें खाने पीनेका जो सामान था सो आगेके लिये बचा रक्खा। केवल घोंघों और सीपोंसे काम चलाया था। भाग्यसे मीठे पानीका एक सोता भी मिल गयाथा जिसका जल पीकर जी हरा होजाता था।

चौथे दिन प्रातःकाल साहस करके मैं पैदलही कुछ दूर निकल गया तो क्या देखता हूं कि कोई पांचसौ गज दूर एक टीले पर आग जल रही है और उसके चारों ओर औरत मर्द तथा लड़के बैठे हैं जो गिनतीमें दसबीस होंगे। वह सब बिलकुल नङ्गे थे। उनमेंसे एककी दृष्टि मुझ पर पड़ गई। उसने अपने साथियोंको भी दिखा दिया। बस पांच जने लड़के बालोंको वहीं आगके पास छोड़ कर मेरी ओर बढ़े। मैं प्राण लेकर किनारेकी तरफ आया और डोंगी पर चढ़के लम्बा हुआ। मुझको भागते देख कर वह सब भी मेरे पीछे दौड़े। मैं बहुत दूर न गया हूंगा कि एक तीर टखने मेरे घुटनेको छेद कर पार होगया। मैं और भी तेजीसे आगे बढ़ गया। तीरमें कदाचित विष हो यह विचार कर मैंने चट घावको चूम लिया फिर धो धा कर पट्टी चढ़ा दी।

अब क्या करूं? उस जगह जहां आश्रय लिया था लौट जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। मैं खड़ा होकर देखने लगा कि अब किधर जाऊं इतनेमें ईशान कोणकी तरफसे एक जहाज आता हुआ दिखाई दिया। अब मैं यह सोचने लगा कि ठहरूं या चल दूं। अन्तमें यह निश्चय किया कि युरोपीय याहुओंका मुंह देखनेसे असभ्य जङ्गलियोंके साथ रहनाही अच्छा है। बस मैंने डोंगीको चट पट दक्षिणकी ओर घुमाया। पाल तान कर डांड़ चलाने लगा। फिर वहीं जा पहुंचा जहांसे सवेरे चला था। डोंगीको

किनारे बांध कर मैं उस सोतेके पास जिसका पानी मीठा था एक ढोंकेके पीछे छिप रहा।

इतनेमें जहाज भी मील डेढ़ मील पर आकर खड़ा होगया। मीठे पानीके लिये कुछ लोग किश्ती पर सवार होकर सोतेकी तरफ चले। मालूम होता है इस सोतेको लोग पहलेसे जानते थे। जब किश्ती एक दम पास आपहुंची तब मैंने उसको देखा। अगर पहलेसे देखता तो कहीं दूसरी जगह लुक जाता पर अब इतना समय कहां? वह सब सिर पर आ पहुंचे अब भागूं कैसे? खैर सांस रोक कर मैं वहीं दबक गया। इतनेमें वह सब किश्तीसे उतर पड़े। सामने मेरी डोंगीको देख कर चौंके। उसको अच्छी तरह देख भाल कर उन्होंने निश्चय कर लिया कि इसका मालिक कहीं पासही है। उनमेंसे चार जने जो हथियार बन्द थे लगे वहांकी खोह कन्दराओंको रत्ती रत्ती ढूंढ़ने। ढूंढ़ते ढूंढ़ते वह चारों वहां पहुंचे जहां मैं पट पड़ा हुआ था। चमड़ेका कोट पटलून, काठके तलेके जूते, बालदार मोजे आदि मेरी अनोखी भद्दी पोशाक देख कर आश्चर्यके मारे उनकी टकटकी लग गई। उस देशवाले सदा नङ्गे रहते हैं इससे उन्होंने मुझे वहांका निवासी नहीं समझा। उनमेंसे एकने पुर्त्तगाली भाषामें कहा—"उठ! तू कौन है?" मैं इस भाषाको खूब जानता। मैंने उठ कर जवाब दिया—"मैं एक दीन याहूं हूं हिनहिनोंने मुझे निकाल दिया है। कृपा कर मुझे छोड़ दीजिये।" मुझे पुर्त्तगाली भाषा बोलते देख कर वह और भी दङ्ग होगये। मेरा रङ्ग देख कर उन्होंने मुझको युरोपियन समझा पर 'याहू' और 'हिनहिन' उनकी समझमें न आये। साथही इसके मेरे बोलनेमें घोड़े कीसी हिनहिनाहट सुन कर वह लोग हंस पड़े। मैं भय और घृणासे कांप रहा था। मैंने फिर विनय पूर्वक कहा मुझे छोड़ दीजिये लेकिन किसीने कुछ ध्यान नहीं दिया। ज्योंहीं मैं डोंगीकी तरफ बढ़ने लगा उन लोगोंने पकड़के पूछा—"तू किस देशका है और कहांसे आता है?" मैंने

कहा—"मैं इङ्गलेण्डका हूं। वहांसे आये मुझे पांच साल हुए। उस समय इङ्गलेण्ड और पुर्त्तगालमें मेलही था। इस लिये मैं आशा करता हूँ कि आप लोग मुझे अपना शत्रु न समझें। मैंने आप लोगोंका कुछ बिगाड़ा भी नहीं है। मैं एक गरीब यात्री हूँ। इस दुःख भरे जीवनके बचे खुचे दिनोंको टेर करनेके लिये एकान्त स्थान ढूँढ़ता फिरता हूँ। कृपा कर मुझे जाने दीजिये।"

इतना सुन कर जब वह आपसमें बोलने लगे तो उनका बोलना नितान्त अपूर्व और अस्वाभाविक प्रतीत होता था। यही जान पड़ता था मानो इङ्गलेण्डमें कुत्ता या गाय बोल रही है या हिनहिन देशमें यात्री। उधर वह लोग मेरी विचित्र पोशाक और विचित्र बोल चाल पर आश्चर्य्य मान रहे थे। वह बड़ी नम्रता पूर्वक कहने लगे—"आप किसी बातकी चिन्ता न करें। कप्तान मुफ्तमें आपको लिसबन तक ले चलेगा। वहांसे आप अपने मुल्कको मर्जीमें जा सकते हैं। कप्तानसे पूछनेके लिये हम आदमी भेजते हैं तब तक आप यहीं ठहरें। अगर आप भागना चाहेंगे तो भागने न देंगे।" लाचार उनका कहना मानना पड़ा। वह सब मेरी कहानी सुननेके लिये व्यग्र थे पर मैंने कुछ न बताया। वह मुझे पागल समझने लगे। मीठा पानी पहुँचा कर किश्ती दो घण्टे में वापस आई। मैंने बहुतेरा कहा सुना पर सब व्यर्थ हुआ। कप्तान की आज्ञानुसार उन्होंने मुझको बांध कर किश्ती पर धर लिया। थोड़ी देरमें किश्ती जहाजके निकट जापहुँची। वहांसे मैं कप्तान के पास ले जाया गया।

कप्तानका नाम था पिडरोडी मण्डिज। वह बड़ा सज्जन और उदार पुरुष था। उसने मेरा बड़ा आदर सत्कार किया और हाल अहवाल पूछा। कहने लगा आप किसी बातकी फिकर मत कीजिये आपको कोई तकलीफ न होगी। आपके खाने पीनेका क्या बन्दो-बस्त किया जाय इत्यादि। यात्रीमें इतनी सभ्यता देख मुझको आश्चर्य्य होता था। मैं कुछ न बोला चुपचाप बैठा रहा। उन लोगों

की गन्धसे मेरी नाक फटी जाती थी। मैंने अपने साथकी चीजों को खाना चाहा पर उसने खाने न दिया अपने पाससे कुछ मांस तथा कुछ बढ़िया शराब दी। इच्छा न रहने पर भी मैंने उसीको खाया। सोनेके लिये साफ सुथरा कमरा बता दिया। मैं बिना कपड़े उतारेही वहां जाकर सोरहा। आधे घण्टेके बाद जब सब खाने पीनेमें लगे तो मैं सन्नाटा देख कर चुप चाप बाहर निकल आया। याहुओंके साथ रहनेसे समुद्रमें कूद कर निकल जानाही अच्छा समझ कर ज्योंही मैं कूदने लगा एक जहाजीने आकर पकड़ लिया। कप्ताननें यह सुनकर मेरे पैरोंमें फिर बेड़ियां डलवा दीं।

खापीकर वह मेरे पास आया और कहने लगा क्यों आप जान देते हैं? जो कहिये मैं करनेको तैयार हूं। और भी बहुतसी बातें उसने ऐसे ढङ्गसे कहीं कि जिसमें मुझे मालूम होगया कि उसको भी अक्लसे कुछ सरोकार है। फिर मैं भी उसके साथ वैसाही वर्त्ताव करने लगा। अपना संक्षिप्त वृत्तान्त उसे कह सुनाया। वह उसको झूठ मानने लगा। तब मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि मेरी झूठ बोलनेकी लत एक दम छूट गई थी। सब देशोंमें जहां याहुओं की चलती बनती है वह झूठ बोलनेमें एकही होते हैं इसीसे दूसरों के सत्यमें भी उन्हें असत्यही दिखाई पड़ता है। मैंने कप्तानसे पूछा "क्या जो बात नहीं है सो कहनेकी चाल तुम्हारे देशमें है? असत्य क्या है यह मैं एक दम भूल गया हूं। अगर मैं हजार साल भी हिनहिन देशमें रहता तो वहां किसी नौकरके भी मुंहसे असत्य न सुनता। आप मेरा विश्वास करें चाहे न करें मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता। पर आपने मेरी बहुत खातिर की है इससे कहता हूं कि आपको जहां शङ्का हो पूछिये मैं उत्तर दूंगा फिर सहजहीमें सच झूठका पता लग जायगा।"

कप्तान बड़ा चालाक था। वह बात बातमें मुझे झूठा बनाने के लिये कोशिश करने लगा पर बचाजीकी कुछ पेश न गई। अन्त में उसको मेरी बातोंका विश्वास होने लगा। वह बोला—"अच्छा!

जब आप इतना सच बोलते हैं तो इकरार कीजिये कि अब मैं न भागूंगा और न जान देनेकी कोशिश करूंगा। अगर आप इकरार न करेंगे तो इसी तरह कैदमें रहना पड़ेगा।" मैंने उसके कथनानुसार प्रतिज्ञा करली पर साफ कह दिया था कि सब कष्ट सह लूंगा याहुओंके साथ कभी न रहूंगा। आखिर मेरी बेड़ियां काटदी गई।

जहाज वहांसे फिर चला। रास्तेमें कोई भारी घटना नहीं हुई। कप्तान जब बहुत कहता तो उसके उपकारोंको याद कर मैं कभी कभी उसके पास जा बैठता था। मनुष्य जाति पर जो मेरी आन्तरिक घृणा थी सो प्रगट नहीं होने देता था। अगर हो भी जाती तो बेचारा कप्तान उसका कुछ ख्याल नहीं करता था। मैं किसीका मुंह देखना नहीं चाहता था दिन रात अपने कमरेमें रहता था। वह कपड़े बदलनेके लिये रोज कहता पर मुझे याहूका उतरा हुआ कपड़ा पहनना मञ्जूर न था। बहुत कहने सुनने पर मैंने धोई हुई दो कमीज उससे लीं जिन्हें दूसरे तीसरे दिन अपनेही हाथोंसे धो लेता था।

ता० ५ नवम्बर सन् १७१५ ईस्वीको हम लोग पुर्त्तगालकी राजधानी लिसबनमें पहुंचे। मेरा विचित्र वेष देख कर बहुत भीड़ इकट्ठी न होजाय इसलिये जहाजसे उतरनेके समय कप्तानने अपना लबादा मुझे जबरदस्ती पहना दिया था। वह मुझे अपने घर ले गया। मेरे कहनेसे उसने मुझे अपने घरके पिछवाड़ेके सबके ऊपर वाले कमरेमें उतारा था। मैंने हाथ जोड़ कर उसको मना कर दिया था कि हिनहिनेके बारेमें किसीसे कुछ मत कहना। अगर जरा भी इसकी भनक किसीके कानमें पड़ जायगी तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे। मैं तुरत नास्तिकोंकी तरह बड़े घर भेजा जाऊंगा या आगमें फूंक दिया जाऊंगा। कप्तानने बहुत हठ करके एक जोड़ा नया कपड़ा बनवा दिया था परन्तु दर्जीको मैंने अपनी देह नहीं छूने दी थी। उसका डील डौल प्रायः मेरेही सा था इससे

उसके कपड़े मेरे बहुत ठीक होते थे। और भी बहुतसी जरूरत की चीजें उसने बनवादी थीं जिन्हें चौबीस घण्टे हवामें सुखा कर मैं काममें लाता था।

कप्तानके स्त्री नहीं थी और न तीनसे अधिक नौकर। भोजन के समय यह लोग मेरे पास नहीं आने पाते थे। उसका आचरण तथा विचार ऐसा सुन्दर था कि धीरे धीरे उस पर मेरी श्रद्धा होने लगी। उसके साथ रहनेमें मुझे कोई कष्ट नहीं होता था। अब मैं पीछेकी खिड़कियोंमें भी झांकने लगा। और दूसरे कमरे में आया। गलीमें झांकता पर डरके मारे तुरत मुंह फेर लेता। एक सप्ताहमें वह मुझे द्वार तक ले आया। मेरा भय क्रमश: भागने किन्तु घृणा बढ़ने लगी। शेषमें उसके साथ मैं बाजार हाटमें भी घूमने लगा। पर नाकमें काला दाना और तम्बाकू ठूंस लेता था क्योंकि याहुओंकी गन्ध मुझसे सही नहीं जाती थी।

कप्तान पिडरूको मैंने अपने घरका कुछ हाल कह दिया था। इससे उसने बहुत समझा बुझा कर मुझको घर जानेकी सलाह दी और कहा—"एक जहाज इङ्गलेण्ड जानेको तैयार है तुमको जरूर जाना चाहिये। खर्च वर्चका बन्दोबस्त मैं कर दूंगा। जैसा एकान्त स्थान तुम ढूँढ़ते हो वैसा स्थान मिलना तो असम्भव है। घरहीमें तुम इच्छानुसार एकान्त वास कर सकते हो। घरसे बढ़ कर निराली जगह और कोई नहीं है।"

जब और कुछ करते धरते न बना तो कप्तानकी बात मानली। ता० २४ नवम्बरको एक अङ्गरेजी तिजारती जहाज पर मैं लिस-बनसे बिदा हुआ। बिचारा कप्तान जहाज तक मुझे पहुँचा गया था। चलनेके समय हम दोनों खूब गले गले मिले थे। उसने मुझे दोसौ रुपये उधार दिये थे। मैं बीमारीका बहाना कर अपने कमरे में बैठा रहता था। जहाजके आदमियोंसे कभी कुछ न बोलता था। यहां तक कि जहाजके मालिकका क्या नाम था सो भी मैंने नहीं पूछा। ता० ५ दिसम्बर १७१५ ई० के सवेरे नौबजे जहाज

डाउन्सके बन्दरमें जा पहुंचा। तीन बजे शामको मैं कुशल पूर्वक अपने घर पहुंच गया।

घरवालोंको मेरे पहुंचनेसे बड़ी खुशी और ताज्जुब हुआ क्योंकि वह सब मुझसे निराश होचुके थे। लेकिन मैं सत्य कहता हूं कि उन सबको देख कर मुझे बड़ी घृणा हुई थी। उनकी ओर देखने की भी इच्छा नहीं होती थी। यद्यपि कप्तान पिडरूके साथ रहते रहते याहुओंसे बोलनेका अभ्यास पड़ गयाथा तथापि मैं उन महात्मा ह्निनह्निनोंके सद्गुणोंको नहीं भूला था। याहुओंसे समागम करके मैंने भी दो चार याहुओंको उत्पादन किया है यह सोच कर मैं बहुतही लज्जित, सन्तापित और भयभीत होजाता था।

गृहमें प्रवेश करतेही मेरी भार्याने दौड़ कर मेरा आलिङ्गन तथा चुम्बन किया। मैं उसी समय चक्कर खाकर गिर पड़ा क्योंकि याहुओंकी स्पर्श करनेका अभ्यास बिलकुल छूट गया था। प्रायः एक घण्टेके बाद मैं होशमें आया था। इङ्गलेण्ड पहुंचनेके पांच वर्षके पश्चात् मैंने इस पोथीके लिखनेमें हाथ लगाया। पहले वर्ष में तो मैं अपने बालबच्चोंको नहीं देख सकता था। उनके साथ बैठ कर एक जगह खाना तो दूर रहा उनकी गन्ध भी सह्य नहीं होती थी। मैं अब तक भी अपनी थाली या प्याली किसीको छूने नहीं देता हूं। मैंने दो जवान घोड़े खरीद लिये हैं जो अखता नहीं हैं। इनको एक अच्छे तवेलेमें रक्खा है। इनकी पीठ पर न जीन धरता हूँ और न मुंहमें लगाम लगाता हूं। यह मेरे बड़े प्यारे हैं। कमसे कम चार घण्टे रोज मैं इनसे बात चीत करता हूं। यह मेरी बोली मजेमें समझ लेते हैं। दोनों घोड़े आपसमें खूब मेल जोल रखते हैं और मुझको अपना मित्र समझते हैं। अश्वसेवकको भी मैं प्रेमकी दृष्टिसे देखता हूं क्योंकि अश्वशालाकी सुगन्धसे सुवासित होकर जब वह मेरे निकट आता है तो मैं फूले अङ्ग नहीं समाता हूं।

द्वादश परिच्छेद।

प्रिय पाठकगण! मैं अपने सोलह वर्ष सात महीने कई दिनके विचित्रविचरणका पूरा वृत्तान्त आप लोगोंसे निवेदन कर चुका। मैंने इसमें अपनी तरफसे कुछ नोन मिर्च न लगा कर ज्योंकी त्यों सब बातें लिखनेकी चेष्टाकी है। यदि चाहता तो मैं भी अन्यान्य ग्रन्थकारोंके सदृश अद्भुत असम्भव बातें लिखकर आप लोगोंको चमत्कृत कर सकता परन्तु मैंने सत्य घटनाओंको सरल सीधी भाषामें लिखनाही उचित समझा क्योंकि नये नये विषय बतानाही मेरा मुख्य उद्देश्य है, मनोरञ्जन करना नहीं।

पृथ्वीके जिन दूर देशोंमें इङ्गलेण्ड वा युरोपका कोई विरलाही मनुष्य पहुँचता है वहांके जल और स्थलके अद्भुत जीवोंका वर्णन करना हम विचरणकारियोंके लिये कुछ बड़ी बात नहीं है। मेरी समझसे भिन्न भिन्न देशोंकी भली बुरी रीति व्यवहारका दृष्टान्त दिखा कर लोगोंको श्रेष्ठ कुशल और विज्ञ बनाना यात्रियोंका प्रधान लक्ष्य होना चाहिये।

मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक ऐसा नियम बन जाता जिससे प्रत्येक भ्रमणकारीको अपने अपने भ्रमणका वृत्तान्त प्रकाशित करनेसे पहले लार्ड हाइचांसलर (प्रधान राजकर्म्मचारी जिसके पास राजाकी मुहर रहती है) के समक्ष शपथ पूर्वक कहना पड़े कि मेरी पुस्तक मेरे जानते नितान्त सत्यता पूर्ण है। ऐसा नियम होजानेसे पाठकोंको आजकलकी तरह प्रतारित होना न पड़ेगा। बहुतसे ग्रन्थकार ऐसे हैं जो वाहवाही लूटनेके लिये अपनी पोथियोंमें झूठका पहाड़ खड़ा करते हैं और भोले भाले पाठक भी उन्हींको पढ़ कर प्रसन्न होतेहैं। मैं भी भ्रमणविषयक अनेक पुस्तकें पढ़कर बाल्यावस्थामें आनन्दित होता था परन्तु जबसे मैं स्वयं पृथ्वी के बहुतेरे भागोंमें विचरण करने लगा हूं उनकी पोल खुल गई है। अब उन पोथियोंके पढ़नेकी तनक भी रुचि नहीं होती है। इरल

पाठकोंका इस प्रकार ठगा जाना देख कर मेरी क्रोधाग्नि कुछ भभक उठती है। मेरे मित्रोंकी कामना थी कि यह पोथी उपयोगी अथच मनोरञ्जक हो, इसी लिये मैंने सत्यसे विचलित न होनेका दृढ़ सङ्कल्प करके इसे लिख डाला है और जब तक महात्मा छिनछिनोंके सदुपदेश मेरे चित्तमें अङ्कित रहेंगे मैं इस पवित्र सङ्कल्प को त्याग भी नहीं सकता हूं।

जिस पुस्तककी रचनामें उत्कृष्ट स्मरणशक्ति या यथार्थ दिन चर्याके अतिरिक्त विद्या, प्रतिभा अथवा और किसी गुणका प्रयोजन नहीं है उससे कितना नाम होता है सो मैं भली भांति जानता हूँ। मैं यह भी जानता हूं कि जब कोई नूतन सुविशाल कोष बन कर तैयार होता है तब प्राचीन कोषकारोंको लोग भूल जाते हैं। ठीक यही दशा भ्रमण वृत्तान्त लेखकोंकी भी है। सम्भव है कि मेरे बाद कोई यात्री उन देशोंमें जाकर जिनका वर्णन इस पोथीमें है नई नई बातें देखे और मेरी भूल (यदि कोई हो) निकाल कर मेरी जगह छीनले तथा पाठकगण भी मुझे भूल जांय। यदि मैं केवल नामहीके लिये लिखता तो सचमुच मुझे बड़ा दुःख होता परन्तु मैंने तो लोकोपकारके हेतु लिखा है अतएव हताश होनेकी कोई बात नहीं है। ऐसा कौन है जो अपनेको सज्ञान और प्रधान जीव समझ कर भी अपने पापों पर लज्जित हुए बिना छिनछिनों के सद्गुणोंको पढ़ सकता है? याहू-प्रधान दूरस्थ जातियोंमें ब्रोबडिगनेगवाले सबसे कम दूषित हैं। इन लोगोंके सुन्दर नैतिक और राजकीय सिद्धान्तका अनुकरण करना हमारे लिये लाभकारी है। इस विषयको अधिकविस्तार न कर इसके निर्णयका भार विवेकवान पाठकोंके ऊपरही छोड़ता हूँ।

मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न हूं कि मेरी पुस्तकमें सम्भवतः कोई दोष किसीको नहीं मिल सकताहै। जिन दूर देशोंसे हम लोगोंको कुछ भी लाभ नहीं उनकी सच्ची घटनायें सरल स्पष्ट शब्दोंमें लिखने से भला कोई क्या आपत्ति कर सकता है? भ्रमण वृत्तान्तके साधा-

रण लेखकोंमें जो दोष प्रायः हुआ करते हैं उनको मैं बहुत साव-धानीसे बचा गया हूँ। इसके अतिरिक्त, किसी दल वा समाज वा व्यक्ति विशेष पर आक्रमण न कर शुद्ध भावसे इस पोथीको लिखा है। परमगुणान्वित हिनहिनोंके सत्सङ्गमें इतने दिनों तक वास करनेके कारण मैं कुछ श्रेष्ठ बन गया हूँ इसीसे मनुष्य समाजको सुशिक्षित बनाना मेरा अभीष्ट है कुछ लाभ करना या यश पाना नहीं। एक शब्द भी इसमें कल्पित नहीं है। जो सदा सबसे चिढ़े रहते हैं उनके चिढ़ानेके लिये भी इसमें कुछ नहीं है। अतएव मैं अपनेको पूर्ण निर्दोष ग्रन्थकार कह सकता हूं। आलोचक, समा-लोचक, पर्य्यालोचक प्रभृति मेरा बाल वांका नहीं कर सकते हैं।

चुपकेसे आकर लोग मेरे कानोंमें कह जातेहैं "तू इङ्गलैण्डकी प्रजा है तेरा कर्त्तव्य था कि पहुँचनेके साथही "सेक्रेटरी आफ ष्टेट" को जिन देशोंको तैंने देखा है उनकी सूचना देता क्योंकि प्रजा जो भूमि या देश प्रगट करती है सो राजाहीका होता है। पर तैंने अपना कर्त्तव्य पालन न करके बड़ा अन्यान्य किया है।" कहने वालोंका कहना बहुत ठीक है। पर शङ्का यह होती है कि फरदी नन्डूकोर्टेने असभ्य अमेरिकावालोंको अनायासही जिस प्रकार जीत लिया था उसी प्रकार लिलीपट आदिको जीतना क्या सहज है ? मैं समझता हूं लिलीपट पर चढ़ाई करनेसे बगुलामारेपखना हाथकी कहावत चरितार्थ होगी। व्रौवडिगनेग पर आक्रमगण करना निरी मूर्खता तथा कालको बुलाना है। आकाशमें उड़नेवाले द्वीप का अङ्गरेजी सेना भला करही क्या सकती है ? बाकी रहे हिन-हिन सो लड़नेके लिये तैयार नहीं है क्योंकि वह लड़ना, विशेष कर अस्त्र चलाना बिलकुल नहीं जानते हैं। यदि मैं आमात्यके पद पर होता तो इनपर आक्रमण करनेकी सम्मति कदापि न देता। इनकी सावधानता, एकता निर्भीकता और देशानुरागही युद्ध विद्या के अभावको पूर्णरूपसे दूर कर देते हैं। यदि दस हजार हिनहिन युरोपीय सेनाके बीच घुस पड़ें तो सारी सैन्य रचना नष्ट भ्रष्ट हो

जायगी। छिनछिनगण गाड़ियोंको उलट देंगे और मारे दुलत्तियों के योद्धाओंके मुँहका हलवा बना डालेंगे। मेरी आकांक्षा है कि ऐसी उदार जातिको जीतनेके बदले उससे शिक्षा प्राप्त करना चाहिये। अगर कुछ छिनछिन यहां आजाते तो वह आदर सम्मान, न्याय सत्य, संयम, देशहितैषिता, सहिष्णुता, जितेन्द्रियता, मित्रता, परोपकारिता, कर्त्तव्य परायणता आदि जिन सद्गुणोंके नाम हमारे यहां केवल पुस्तकोंहीमें पाये जातेहैं उनकी शिक्षा देकर हम लोगों को सुसभ्य बना देते।

मैंने अपने देशोंकी सूचना सेक्रेटरी आफ ष्टेट (राजमन्त्री) को न दी इसका एक और कारण है। सच पूछो तो महाराजोंके न्यायकी विचित्रता देख करही मुझे कुछ खटकासा होगया है इसी से महाराजके राज्यकी बढ़ानेसे जी हिचकिचाता है। अच्छा! विचित्र न्यायका उदाहरण सुनिये। डाकुओंका एक जहाज तूफान के मारे भटक कर एक ओर जापड़ा है। कहां जापड़ा सो किसी को मालूम नहीं है। आखिर मस्तूल परसे एक छोकरेको कुछ भूमि दिखाई पड़तीहै। लूट पाट करनेके लिये डाकू लोग वहीं जा पहुंचते हैं। किसी भलेमानससे भेंट होगई तो वह आदर सत्कार करताहै। वह लोग उस देशका एक नया नाम रखकर अपने राजा की तरफसे उसे चट दखल कर लेते हैं। स्मारक चिन्हके बदले एक पत्थर या सड़ा तखता गाड़ देते हैं। वहांके दो चार दरजन आदमियोंको मारकर दो चारको नमूनेके बतौर जबरदस्ती स्वदेश घसीट लातेहैं। बस राजा भी प्रसन्न होकर उनके पिछले अपराधोंको चमाकर देता और ऐश्वरिक स्वत्व (Divine right) की दुहाई दे उस देश पर अपना अधिकार जमा लेता है। फिर मौका मिलतेही वहां जहाज भेजे जातेहैं। वहांके निवासी मारे या निकाले जाते हैं। खजानेका पता लगानेके लिये वहांके राजाओंको बहुत सतातेहैं और मनमाना अत्याचार करते हैं। देशवासियोंके रक्तसे भूमि लाल होजातीहै। ऐसेही नीच हत्यारे असभ्योंको सभ्य बनाने तथा मूर्त्ति

पूजकोंको धर्म्मकी दीक्षा देनेके लिये भेजे जाते हैं। यही है आधुनिक उपनिवेशोंकी स्थापना !

परन्तु अङ्गरेजों पर यह उदाहरण किसी प्रकार भी नहीं घट सकता है। यह लोग उपनिवेश स्थापित करनेमें अपने सुविचार, यत्न और न्यायके कारण संसारके आदर्श स्वरूप हैं। यह धर्म्म और विद्याकी उन्नतिके लिये बहुतसा धन दान करते, क्रस्तानी धर्म्म विस्तृत करनेके लिये योग्य और गम्भीर पादड़ियोंको चुनते, बड़ी सावधानीसे मातृ भूमिके सदाचारी और संयमी पुरुषोंको अपने इलाकेमें इकट्ठे करते न्यायको तरफ विशेष ध्यान रखते और राज काज चलानेके लिये उपनिवेशोंमें अच्छे अच्छे सुयोग्य कर्म्मचारी नियत करते हैं जो घूस लेना बिलकुल नहीं जानते। सबके ऊपर लाट ऐसा भेजते हैं जो बड़ाही धार्म्मिक और सतर्क होता है और जो प्रजाके सुख और राजाके गौरवके सिवा और किसी ओर ध्यान ही नहीं देता है।

किन्तु मैंने जिन देशोंका वर्णन किया है वहांके रहनेवाले पराधीन होना, प्राण देना या देशवहिष्कृत होना किसी तरह भी नहीं चाहते हैं और न वहां सोना, चांदी, चीनी या तम्बाकूही बहुतायत से होता है। सचमुच वह सब देश हमारे उत्साह और साहस दिखानेके योग्य नहीं हैं और न उनसे हमारा कुछ लाभही हो सकता है। खैर, जो इन बातोंसे ज्यादे सरोकार रखते हैं वह मेरी बातें यदि न मानें तो मैं अदालतमें भी कहनेको तैयार हूं कि जो दोनों यात्री प्राचीनकालमें छिनछिन देशके किसी पहाड़ पर देखे गये थे उनके सिवा और कोई युरोप निवासी मुझसे पहले वहां नहीं गया है।

अगर सच पूछिये तो महाराजके लिये उन मुल्कोंको दखल करनेकी बात मुझे यादही न पड़ी। अगर पड़ती भी तो मैं क्या कर सकता था ? उस समय अपनी जान बचाता या मुल्क दखल करता ?

मेरी यात्राके विषयमें केवल यही एक शङ्का कभी उठ सकती थी सो उसका समाधान मैं कर चुका। अब मैं विज्ञ पाठकोंसे विदा होकर अपनी रेडरिफ वाली छोटी वाटिकामें जाता हूं। वहीं विचार सागरमें मग्न रहूंगा, ह्निनह्निनोंके सदुपदेशको काममें लाऊंगा, अपने घरके याहुओंको जहां तक होसकेगा शिक्षित बनाऊंगा, दर्पणमें अपना मुख अवलोकन कर मनुष्योंको देखनेका अभ्यास डालूंगा, यहांके ह्निनह्निनोंके पशुत्व पर दुःख प्रकाश करूंगा और प्रभु तथा प्रभुके परिवारके मुलाहिजेसे उनका आदर सत्कार करूंगा। हमारे यहांके ह्निनह्निनोंकी बुद्धि चाहे भ्रष्ट होगई है परन्तु रूप रङ्ग उन्हीं कासा है। इससे इनका आदर सत्कार करना हमको उचित है।

गये हफ्तेसे मैं स्त्रीके साथ बैठ कर भोजन करने लगा हूं। एक लम्बी मेजके एक सिरेकी ओर मैं बैठता हूं और दूसरे सिरेकी ओर वह। इतने पर भी उसकी दुर्गन्ध सह्य नहीं होती है तो नाकमें काला दाना, तम्बाकू या लवण्डर ठूंस लेता हूं। बुढ़ापेमें पुराने अभ्यासका छूटना कठिन है तो भी मैं निराश नहीं हुआ हूं। चेष्टा करता हूं आशा है कुछ दिनों बाद अपने पड़ोसी याहुओंको जिनके नख और दांतोंका अभी डर लगता है अपने पास आने दूंगा।

याहूगण यदि प्रकृति प्रदत्त कुप्रवृत्तियोंहीसे सन्तुष्ट रहते तो मुझसे मेल मिलाप करनेमें इतनी कठिनता न पड़ती। वकील, जेबकट, सेनापति, मूर्ख, जुआरी, राजनैतिक, लाट,(Lord), कुटना, वैद्य, साक्षी, झूठीगङ्गाजलीउठानेवाले, विश्वासघातक प्रभृतिको देख कर अब मुझे तनक भी बुरा नहीं मालूम होता है। संसारका यही नियम भी है। किन्तु जब मैं कुरूप, कुबुद्धि और रोगियों को अभिमान करते देखता हूं तो मेरा जी जल उठता है। यह लोग क्यों अभिमान करते हैं सो समझमें नहीं आता है। महात्मा ह्निनह्निनोंकी भाषामें तो इसके लिये कोई शब्दही नहीं। इसके लिये क्या किसी पापके लिये भी नहीं हैं। जो हैं भी सो याहुओं

के घृणित पापोंको वर्णन करनेके लिये। हिनहिन मनुष्योंके स्वभाव को अच्छी तरह नहीं समझते हैं इसीसे याहुओंके स्वभावमें उन्हें अभिमानकी झलक नहीं मालूम होती है। किन्तु मुझे बहुदर्शिता के कारण जङ्गली याहुओंमें अभिमानकी कुछ रमक मालूम पड़ती है। हम लोगोंको अपने हाथ पावोंका जैसे कुछ घमण्ड नहीं है वैसेही ज्ञानी हिनहिनोंको अपने अच्छे गुणोंका। अङ्गरेज याहुओंको सुधारनेहीके लिये मैंने इस विषयको इतना तूल दिया है।

अन्तमें निवेदन है कि जो अपने मनमें तनिक भी अभिमान रखते हों वह मेरे सामने न आवें और न अपना मुँह मुझे दिखावें।

इति चतुर्थभाग समाप्त।

शुद्धाशुद्धपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	१०	जङ्गल जानेकी हाजतथी। कातर होकर……किया।	भूखने इतना सताया कि मैंने लाज शरम छोड़के बार बार उंगलियोंको……किया।
१३	७	फलकी	फूलकी
२२	१८	चिन्तासे	सबके चित्तसे
२५	१३	अन्तिम युद्ध	कृत्रिम युद्ध
२७	१०	वलगुलामने भी	वलगुलामहोने
३४	१०	बूलफस्कूके महाराजों विद्रोह शान्त होने पर	बूलफस्कूके महाराजोंने विद्रोहियोंका साथ दिया।
३४	१२	विद्रोह शान्त होने पर……लेगये।	विद्रोह शान्त होनेपर जिन जिनको देश निकालेकी सजा हुई थी वह सब बूलफस्कूके महाराजकी शरण में गये।
३४	२१	धर्म्मशाला	धर्म्मशास्त्र
३८	८	नर्डन	नर्डक
४१	१७	लोग वागडोर	लोग वहां डोल
४२	१	पेशाश	पेशाब
४४	१	सकार	सरकार
४४	१४	उधार और लेने देने	उधार लेने देने
४५	२४	सदाशयतका	सदाशयका

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७	३	लिलीपट	लिलीपटी
४७	१३	योंही	यहीं
४८	२१	पोषणका	पोषणका भार
५०	६	जानता हूँ	नहीं जानता हूँ
५५	२७	जिममे	जिसमें
५७	२५	उसकी स्मरण चिन्ह	उसका अस्थिपञ्जर स्मरण चिन्ह
५८	१५	पकड़ कर	पड़ कर
७४	८	मुझसे	मुझको
७६	२०	चिममसे	चिमटेसे।
८२	१३	किमानने	किसानने
८६	२४	चाहते या तथा	चाहते तथा
६२	११	उतनाही पाया	उतना नहीं पाया।
६५	१८	मेरे सामने नङ्गी देख कर	मेरे सामने नङ्गी हो कर कपड़े बदलती थीं।
६५	१८	नङ्गी देख कर	इन्हें नङ्गी देख कर
६६	१७	पानीमें भरे	पानीसे भरे
१०१	२२	सेनामें	सेवामें
१०३	७	खूब लाभ है	खूब नाम है
१०५	५	आदेशिक	प्रादेशिक
११४	३	तीनों	दोनों
११६	१७	पीके रहने	छिपे रहने
१२५	८	जरोह	जर्राह
१३०	१३	आयही	आधही
१३२	१	वहां	वहांसे
१३५	५	कोठियां दुरुस्त होतीं	कोने दुरुस्त होते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३५	७	बड़े पर	बड़े निपुण पर
१५०	१	लस लस	लसलसे
१५०	२४	धूनेके	छूनेके
१५१	८	दृष्ट	दृष्टि
१५५	७	जर्राह	जर्राह
१५५	१६	पापियोंको	पापियों और
१५६	२४	लण्डन	लेङ्गडन
१५७	१६	टोपो मौर	टोपी और
१५७	१६	हगरा	गहरा
१६०	१४	अगरवेला	अरवेला
१६१	८	एपामिराउस	एपामिननडस
१६५	२७	मध्यम	अधम
१७५	२६	यही एक कहानी	यही रामकहानी
१८१	१५	पोकौप	पोकौक
१८३	२०	पत्तियोंसे	पांतियोंसे
१८५	२२	टहलतेथे कि कहीं मैं...............	टहलते थे मगर तिरछी नजरसे मुझे भी देखते जाते थे कि कहीं मैं···
१८६	६	बड़े भावसे	बड़े चावसे
१८८	१४	पीछे बल	पुट्ठेंके बल
१९०	२६	एक सड़ा टुकड़ा	एक जड़का टुकड़ा
१९८	८	सब अपने सङ्ग	सब जगह अपने सङ्ग
२३०	५	पहुंची	पहुँचेगी।
२३१	२२	दीजाती	दीजानी
२३६	८	खेमे	खम्बे
२४०	११	थोथासा	थोड़ासा
२४२	१८	पहला किनारा	परला किनारा